दिसम्बर, 1985
वर्ष 21 ❋ अंक 6

ज्ञानामृत

मूल्य 1.35

१. दिल्ली में लालकिला के सामने परेड ग्राउंड श्री रामलीला कमेटी के महासचिव भ्राता बंसीधर गुप्ता रामलीला मंच पर ब्र. कु. दादी प्रकाशमणि जी को शील्ड देते हुए तथा स्वागत करते हुए। साथ में उपमहापौर अंजना कंवर और पदमश्री सुरेन्द्र गुप्ता जी उपस्थित हैं।

२. बहादुरगढ़ सेवा केन्द्र पर दादी प्रकाशमणि जी तथा ब्र. कु. दादी जानकी जी पदयात्रियों के साथ।

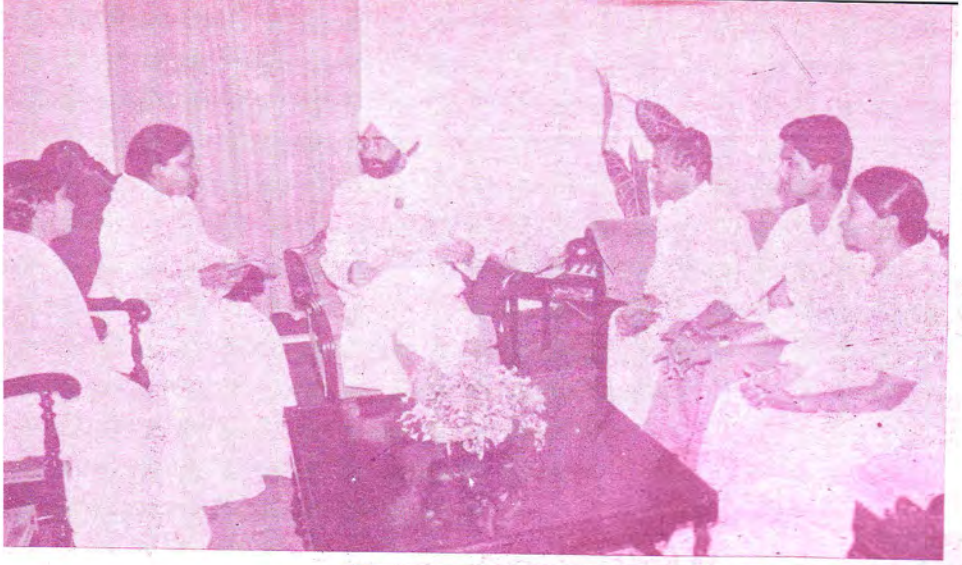

मैसूर में भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैल सिंह जी के साथ ज्ञान-वार्तालाप करती हुई ब्र.कु. नागरत्ना तथा शारदा बहिन जी।

२५ अक्टूबर को दिल्ली विश्व-विद्यालय के श्रीराम कालेज आफ़ कामर्स के सभागृह में 'शान्ति की स्थापना में युवकों का योगदान' विषय पर सेमीनार का आयोजन किया गया। अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं प्रो. मुनीस रज़ा, उपकुलपति दिल्ली विश्व विद्यालय।

गांधीनगर में ब्र. कु. सरला भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष भ्राता अटल बिहारी बाजपायी जी को ईश्वरीय सन्देश देते हुए तथा उन्हें आबू पर्वत पर होने वाले विश्व-शान्ति सम्मेलन के लिये निमन्त्रण देते हुए।

शिमला में युवा सम्मेलन का उद्घाटन राज्पाल भ्राता होकिशा सीमा जी ज्योति जला कर, कर रहे हैं।

जालन्धर में पदयात्रा का स्वागत करने के पश्चात् मंच पर (बाएं से) ब्र. कु. राज, ब्र. कु- दादी चन्द्रमणी जी, उपायुक्त जालन्धर, प्रो. नून-कुमार तथा पदयात्री भाई बहिनें।

कानपुर में पदयात्रा के आगमन पर सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह का दीप जला कर शुभारम्भ करते हुए भ्राता के. सी. श्रीवास्तव, मेजर सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कानपुर तथा ब्र. कु आत्म-इन्द्रा जी।

खारी बावली – दिल्ली सेवा केन्द्र पर आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। चित्र में ब्र. कु. दादी प्रकाशमणी जी तथा दादी जानकी जी तथा अन्य भाई बहनें उपस्थित हैं।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री भ्राता अमरसिंह चौधरी जी कांकरिया अहमदाबाद सेवा-केन्द्र पर पधारे। उन्होंने पांच चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन किया। साथ में शिक्षा राज्यमंत्री प्रो. हसमुख भाई पटेल हैं और ब्र. कु. सरला तथा अन्य खड़े हैं।

शिमला में पदयात्रा के आफ़ समारोह में हि. प्र मुख्यमंत्री भ्राता वीरभद्र जी ब्र. कु. अरुणा बैज लगाते हुए।

काठमाण्डो कलंकीं स्थान में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए स्थानीय वार्ड अध्यक्ष।

भुवनेश्वर में उड़ीसा के सिंचाई मन्त्री भ्राता मोहन नाग सेवा-केन्द्र पर पधारे। उन्हें 'सर्वात्माओं का पिता एक' चित्र भेंट किया गया।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ	क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	परमात्मा की याद और इससे प्राप्ति	१	९.	सेवा समाचार (चित्रों में)	१८
२.	शान्ति और सन्तोष (सम्पादकीय)	२	१०.	घर कल्याणी नहीं, विश्व कल्याणी	२१
३.	टकराव—जीवन का बिखराव	३	११.	सीधा राजपथ	२३
४.	आध्यात्मिकता ही क्यों ?	७	१२.	युवकों के प्रति दो शब्द	२४
५.	ये हैं संस्मरण उस यात्रा के	९	१३.	पावन दृष्टि में पावन सृष्टि	२५
६.	बदला न लो युवको···	१२	१४.	विश्व सेवा	२८
७.	सचित्र समाचार	१३	१५.	जैसी स्मृति वैसी स्थिति	२९
८.	पते की बात	१६	१६.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३१

परमात्मा की याद और उससे प्राप्ति

ब्र० कु० कमलमणी, कृष्णा नगर, दिल्ली

अब हमें परमपिता परमात्मा शिव ने समझाया है कि मनुष्यात्मा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा मुक्ति तो प्राप्त कर सकती है और नर से श्री नारायण तथा नारी से श्री लक्ष्मी के समान देव पद भी प्राप्त कर सकती है परन्तु वह स्वयं परमात्मा नहीं बन सकती। आत्मा और परमात्मा में तो महान् अन्तर है। आत्मा अल्पज्ञ है, वह माया और विकारों के वशीभूत होती है और जन्म-मरण तथा सुख-दुःख के चक्कर में भी आती है परन्तु परमात्मा सदा पावन हैं, मायातीत हैं और लौकिक जन्म-मरण के चक्कर में नहीं आते। बल्कि जब सभी मनुष्यात्माएँ जन्म-मरण के चक्कर में आते-आते पतित बन जाती हैं और अज्ञानान्धकार में होती हैं और जब संसार में धर्म-ग्लानि होती है तब वह, सारे कल्प में एक ही बार, पतितों को पावन करने तथा मुक्ति और जीवन्मुक्ति के ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार के योग्य बनाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग सिखाने आते हैं। इस प्रकार, सभी आत्माओं का कल्याण करने के कारण, सभी आत्माओं से श्रेष्ठ, परमपिता 'परमात्मा' का नाम **'शिव'** है।

अब वही परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं—"मनुष्यात्माओं, अब आप घर-गृहस्थ में रहते हुए, अपने दफ़्तर या दुकान का कार्य करते हुए भी बुद्धि द्वारा मुझ अशरीरी, ज्योतिस्वरूप परमपिता परमात्मा की स्मृति में रहो और अपने सामने श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के जीवन को ही आदर्श के रूप में रखो। इस प्रकार, आप कर्मयोगी बनो और विशेष रूप से भी मेरी स्मृति में स्थिति का अभ्यास करो तो आपको मुझ परमपिता परमात्मा से मुक्ति का तथा आने वाले सतयुगी श्री नारायण राज्य में जन्म-जन्मान्तर के लिए सम्पूर्ण पवित्रता-सुख-शान्ति-सम्पन्न देव पद का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त होगा!"

शान्ति और सन्तोष

आमतौर पर यह देखने में आता है कि जब कभी कोई विशिष्ठ व्यक्ति (VIPs) ब्रह्माकुमारी बहनों से मिलते हैं, तब वे अपना अनुभव व्यक्त करते हुए कहते हैं कि इन बहनों के चेहरों से आन्तरिक सन्तोष, शान्ति तथा पवित्रता की रेखायें झलकती हैं। परन्तु शायद ही ये व्यस्त लोग कभी उन कारणों पर विचार करते होंगे जिनके फल-स्वरूप आन्तरिक सामञ्जस्य, शान्ति तथा सन्तुष्टता से युक्त अवस्था बनती है। जबकि वे इन प्राप्तियों को अमूल्य समझते भी हैं तो भी वे इन्हें प्राप्त करने के लिए गंभीरता से प्रयास नहीं करते।

अर्न्तनिरीक्षण तथा शान्त मन से इस विषय पर विचार करने से यही निष्कर्ष निकलेगा कि उच्च कोटि व अधिक मात्रा में भौतिक पदार्थों की प्राप्ति से सन्तुष्टता नहीं मिलती। अज्ञानता की घोर रात्रि की समाप्ति के बाद ही सन्तुष्टता का उदय होता है। वर्तमान भौतिक जगत से होने वाली प्राप्तियाँ क्षणिक और विनाशी हैं यह अनुभूति ही सन्तुष्टता को जन्म देती है। जिसके मन से भौतिक जगत की प्राप्तियों की इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं, केवल वह व्यक्ति ही सन्तुष्ट हो सकता है। अतः सन्तुष्टता आध्यात्मिक ज्ञान की उच्चतम स्थिति का संकेतक है। जहाँ त्याग और सेवा भाव हो, और सम्पन्नता (भरपूर) की अनुभूति हो, वहाँ ही सन्तुष्टता पनपती है।

इसी प्रकार जब आन्तरिक द्वन्द्व समाप्त हो जाता है तथा मन और बुद्धि का सामञ्जस्य हो जाता है, तभी मानव को मानसिक शान्ति की अनुभूति होती है। जब चिन्ताओं, सांसारिक प्राप्तियों व अधिकारों की इच्छा से मानव उपराम हो जाता है, तब ही शान्ति का जन्म होता है। पवित्रता ही शान्ति की जननी है। जब मानव वास्तविक तथा सतत शान्ति की स्थिति में रहता है, तब उसके चेहरे तथा मस्तक पर पवित्रता की चमक होती है।

सन्तुष्टता, पवित्रता तथा शान्ति—ये त्रिगुण ही जीवन को जीने-योग्य बनाते हैं। इनका जीवन में तभी पर्दापण होता है जब कोई व्यक्ति आध्यात्मिक ज्ञान तथा राजयोग का निरन्तर अभ्यास करता रहता है। योग तपस्या के बिना मानव आन्तरिक शान्ति का न अनुभव कर सकता है और न ही उसे कायम रख सकता है।

परन्तु समस्या यह है कि लोग आमतौर पर यह समझते हैं कि आध्यात्मिक ज्ञान रुचिकर नहीं है, कठिन है और केवल श्रद्धा (कई जगह 'अन्ध-श्रद्धा') का विषय है और मन्त्र उच्चारण तथा कर्मकाण्ड पर आधारित है। परन्तु वास्तविकता यह नहीं है। आध्यात्मिक ज्ञान उतना ही रुचिकर है जितना कि अन्य कोई विषय। योग भी न कोई कर्मकाण्ड है और न ही इसमें कोई संस्कृत के मंत्र रटने की आवश्यकता है। मनन करना, याद करना और अनुभव करना—यही सहज योग है। यह इतना ही सहज है। हाँ, प्रारम्भ में इसके लिए कुछ प्रशिक्षण लेने की आवश्यकता है। कुछ समय इस में लगाना इसी प्रकार है जैसे कोई मनुष्य अपना धन व्यय करता है अधिकाधिक कमाने व प्राप्त करने के लिए। इसके अभ्यास में कुछ समय लगाने से मनुष्य सन्तुष्टता और शान्ति रूपी जीवन के अनमोल उपहारों की प्राप्ति कर सकता है।

आज हर प्राणी और हर समाज शान्ति व सामञ्जस्य की अनुभूति व प्राप्ति के लिए कितने समय, धन और शक्ति का व्यय करते हैं परन्तु ये सब प्रयास वे यह जाने बिना ही किये जा रहे हैं कि आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित योग और पवित्रता से ही शान्ति और सन्तुष्टता की प्राप्ति हो सकती है।

टकराव--जीवन का बिखराव

ब्र० कु० सूरज कुमार, माउण्ट आबू

जैसे बाँसों के पारस्परिक टकराव से सुन्दर वन अग्नि को भेंट चढ़ जाता है, वैसे ही परिवार रूपी सुन्दर बगिया में आपसी संघर्ष सच्चे सुख व स्नेह को नष्ट कर डालता है और मनुष्य रात-दिन प्रतिशोध की अग्नि में जलता हुआ अपने मानसिक विकास से भी हाथ धो बैठता है। तो आओ हम सभी मिलकर विचार करें कि परिवार या समाज में इस टकराव की अग्नि को कैसे बुझाया जाए ! कौन से शीतल जल के छींटों से दूसरों के मन शीतल किये जाएं, मृदुल व्यवहार से कैसे दूसरों का स्नेह व सत्कार जीता जाए। तो यहाँ प्रस्तुत है देवेन्द्र व नरेन्द्र की पारस्परिक ज्ञान-चर्चा।

आज देवेन्द्र का चेहरा जवानी में भी बूढ़ों जैसा हो गया था। मन की खिन्नता मस्तक से प्रतिभासित हो रही थी, चिन्ता का बोझ नयनों तक उतर आया था, जीवन से पलायनता का विचार भय की रेखाएँ अंकित कर रहा था, मन का ज्वार बार-बार तीव्र व मन्द होता हुआ उलझन की लहरों से टकरा रहा था। उसी समय उसके पास उसके परम हितैषी मित्र नरेन्द्र का आना हुआ जिनसे वह कभी भी दिल का हाल नहीं छुपाते थे।

नरेन्द्र—क्यों देवेन्द्र भाई, संगम की इन सुख की घड़ियों में यह उदासी कैसी ? क्या खो गया है आपका ? भगवान से दिव्य मिलन तो हो गया, अब किस वस्तु के अभाव में मन बेचैन है ?

देवेन्द्र—(हल्की सी मुस्कान के साथ)—संघर्षों से लड़ते-लड़ते मन निराशा के गहन गर्त में डूब रहा है, कुछ भी प्रकाश नज़र नहीं आता।

नरेन्द्र—क्यों ऐसी क्या बात हो गई, ज्ञान-सूर्य के तेजस्वी सपूत अन्धकार में क्यों ? ऐसे कौन से काले बादलों ने आ घेरा देवेन्द्र जी ?

देवेन्द्र—(आँखों में अश्रु समाते हुए)—जीवन के प्रारम्भिक ३० वर्ष घरेलू संघर्षों में बीते, जब मन पूर्णतः दुखी हुआ तो घर छोड़कर संन्यास लेने की योजनाएँ बनाईं परन्तु उसी समय भाग्य ने पलटा खाया, घर बैठे प्रभु का सन्देश मिला, उनसे सत्य प्रकाश मिला···जंगलों की भटकन से मुक्ति हुई, जीवन में एक बार तो वर्षों तक भरपूर शान्ति व आनन्द का आविर्भाव हुआ, लगा बस अब जीवन की यही धारा रहेगी, परन्तु न जाने किन पूर्व कर्मों का परिणाम···अब पुनः वही संघर्ष। याद करता हूँ वे दिन जब इस ज्ञान-योग के पवित्र पथ पर अग्रसर हुआ था तो खुशी से रोम-रोम नाचता था, परन्तु न जाने क्यों मैंने पुनः संघर्ष मोल ले लिया।

बन्धु, अब इससे मन भर चुका है, दिल चाहता है कि इन सेवाओं से भी संन्यास ले लूँ, आराम से एकान्त में रहूँ और योगाभ्यास करूँ···

नरेन्द्र—(मुस्कुराते हुए) देवेन्द्र जी, इतनी जल्दी संघर्षों से हार क्यों मान गये, हमें तो माया-जीत बनकर विश्व से माया के साम्राज्य को नष्ट करना है। यदि इतनी जल्दी हार मान लेंगे तो माया तो हावी हो जाएगी।

देवेन्द्र—नरेन्द्र जी, आप तो सदा ही हमारा साहस बढ़ाते हो, यही आपकी सच्ची मित्रता है। मुझे गौरव है आपकी मित्रता पर, पर इस टकराव से तो सारा मनोबल ही नष्ट हो गया। जीवन में परमानन्द तो छोड़ो, यह टकराव तो मन को पूरा खाली कर देता है।

नरेन्द्र—ठीक कहते हैं आप, टकराव हमारे रूहानी पथ पर मानो काँटों का जाल है, उस पर चलकर सुख कहाँ ! यह टकराव जीवन की शान्ति को भंग करके उसे अन्धेरी कोठरी में ला खड़ा करता है।

वास्तव में तो टकराव ग्रस्त मनुष्य हजारों वर्ष में भी सम्पूर्णता की मंजिल पर नहीं पहुँच सकता।

देवेन्द्र—यही तो मैं भी सोचता हूँ कि इतने श्रेष्ठ पथ पर कदम रखने पर भी यह सब क्यों ?

नरेन्द्र—अच्छा देवेन्द्र जी, आप एक बात बताओ कि इस टकराव का कारण कौन हैं—आप या दूसरे ?

देवेन्द्र—(गम्भीर मुद्रा में)—कारण ? दूसरों को दोष देना तो अल्पज्ञता होगी। कारण तो मैं स्वयं ही हूँ।

नरेन्द्र—बड़े ही गर्व की बात है—मुझे खुशी है कि आपका विवेक अभी भी निखरा हुआ है। देवेन्द्र भाई, जो व्यक्ति यह जानता है कि दोषी वह स्वयं है, वह वास्तव में ही ज्ञानी है और वह अवश्य ही इस बीमारी से छट सकता है।

देवेन्द्र—हाँ, यदि हम अपने अहं को समाप्त कर दें तो टकराव समाप्त···हमारा अहं हो इस टकराव का कारण प्रतीत होता है।

नरेन्द्र—हाँ, घर में यदि बच्चों ने सम्मान से बात न की, पत्नि ने कहना न माना, भोजन ठीक न मिला या ज़रा सी देर हो गई, बस मनुष्य का अहं उबल पड़ता है और वह कटु शब्दों का प्रहार करके दूसरे के कोमल मन को बेध डालता है। और फल-स्वरूप टकराव की अग्नि प्रज्जवलित हो उठती है।

देवेन्द्र—ठीक कहा आपने, सेवाओं में मेरे साथ भी वही होता है। या तो कोई मेरी बात नहीं मानता या बार-बार गलती करता है, या मुझसे सत्कार से बात नहीं करता तो मेरा मन अहं से भरकर विष सम वचन उगलने लगता है। इसे दूसरे तो सह जाते हैं परन्तु मेरी परेशानी, मेरी आत्म-ग्लानि की स्थिति बहुत बढ़ जाती है।

नरेन्द्र—तो बन्धु, जब आपको अपनी इतनी बड़ी कमी का एहसास है तो उसे दूर क्यों नहीं कर लेते।

देवेन्द्र—उस समय तो ये सब कुछ भूल जाता है।

नरेन्द्र—अच्छा आज से एक काम करो—पहले तो थोड़ा-सा धैर्यवत् होने का अभ्यास करो। जब भी कुछ बोलने जा रहे हो, एक सेकण्ड रुको और यह मंत्र पक्का करो कि **"उतावलेपन से किये गये प्रत्येक कार्य का परिणाम बुरा ही होता है और अन्ततः मनुष्य को पछताना ही पड़ता है।"**

देवेन्द्र—ठीक है, आज से कंगन बाँधता हूँ, उतावले-पन से बोलना व प्रत्युत्तर करना छोड़ दूँगा।

नरेन्द्र—आपसी टकराव के और क्या कारण हैं ?

देवेन्द्र—आप ही इन सबका विश्लेषण कीजिए।

नरेन्द्र—सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर प्रतीत होता है कि "हमारी दूसरों से कुछ कामनाएँ" ही टकराव लाती हैं। जसे कि यह कामना कि "दूसरे हमारी बात मानें, दूसरे हमें सम्मान दें" आदि···परन्तु प्रत्येक व्यक्ति के अपने भी तो कुछ स्वतन्त्र विचार होते हैं और वास्तव में तो दूसरों को कार्य सौंपकर उन्हें उसे सफल करने की पूरी स्वतन्त्रता दे देनी चाहिए। ऐसा करने से उन का बौद्धिक विकास भी होगा, हम निश्चिन्त भी रहेंगे और परस्पर टकराव भी समाप्त हो जाएगा।

देवेन्द्र—और जब दूसरे अपमान ही करते रहें तो आखिर तो मनुष्य को ठेस लगती ही है कि देखो हमने इनके लिए इतना किया, परन्तु ये उसका ज़रा भी ख्याल नहीं करते।

नरेन्द्र—हमारी ये भावना कि "हमने इनके लिए ये ये किया", दूसरों की हमारे प्रति श्रेष्ठ भावना को समाप्त कर देती है। हमने दूसरों के लिए अच्छा किया, और अच्छा ही करते रहें। बदले में सम्मान की कामना रखना तो हमारे उस पुण्य के फल को वहीं नष्ट कर देती है यानि टकराव का निर्माण करती है।

देवेन्द्र—परन्तु जैसे हमारे बच्चे ही हैं, हम सदा ही उनकी भलाई की बात करते हैं परन्तु वे उल्टा-सुल्टा ही प्रत्युत्तर करते हैं।

नरेन्द्र—देखो देवेन्द्र जी, मैं एक बात अवश्य कहूँगा, जब बच्चे बड़े हो गये, समझदार हो गये, तब वे बच्चे, बच्चे नहीं, भाई तुल्य हो जाते हैं और तब वे स्वतन्त्र हैं। हाँ, आपका कर्त्तव्य उन्हें श्रेष्ठ राय देना है, परन्तु उन पर दबाव डालना किसी भी तरह हितकर नहीं है।

देवेन्द्र—फिर भी बाप होने के नाते कहना ही पड़ता है।

नरेन्द्र—हाँ, फर्ज समझ कर कहना अच्छा है। परन्तु यदि इसमें मोह समाया होता है तो वही बात मनुष्य के लिए मर्ज बन जाती है। और परिवार में टकराव का मूल कारण मोह व अधिकार की भावना का होना है। बस यही संकल्प मनुष्य को परेशान करता है कि ये मेरे होकर भी मेरी बात क्यों नहीं मानते।

देवेन्द्र—आपने सूक्ष्म बात कही···यह बात सत्य है व माननीय है।

नरेन्द्र—बस इस मोह को नष्ट करो। उन्हें भी परमपिता के विशाल विश्व के परिवार के ही सदस्य समझो। वे तो केवल आपके इस अन्तिम जन्म के नाती हैं। आदिकाल से कितनी आत्माओं से नाते जुड़े हैं? हजारों से कर्मों के अच्छे-बुरे हिसाब रहे होंगे।

देवेन्द्र—हाँ, यह टकराव भी विकर्म-बन्धनों के कारण ही है।

नरेन्द्र—तो यदि अब हम इस टकराव को बढ़ायेंगे तो हमारा विकर्मों का बन्धन और ही जटिल होगा और जिसे काटना पुनः और कठिन होगा। और हमारी शुभ-भावनाएँ इस कर्मों के बन्धन को ढीला करेंगी।

देवेन्द्र—बस यही कारण है हमारी उलझनों का। टकराव के बाद शुभ-भावनाएँ नहीं रहतीं। घणा, ईर्ष्या, बदले की भावना व अवगुणी दृष्टि बढ़ती है।

नरेन्द्र—तो कोशिश करके टकराव से बचना चाहिए। ऐसे नहीं कि "आ रे बैल मुझे मार" अर्थात् किसी ने जरा सा कुछ कहा और टकरा बैठे।

देवेन्द्र—हाँ सचमुच यदि मनुष्य चाहे तो स्वयं को टकराव से बचा सकता है। वहाँ से हट जाए, उत्तर ही न दे तो दूसरा टकराएगा भी किससे?

नरेन्द्र—हाँ देवेन्द्र जी, देखो एक तरफ सम्पूर्णता की हमारी इतनी महान मंजिल और दूसरी ओर ये कितनी तुच्छ टकराव की स्थिति जो कि अन्त-र्मन को अशान्त कर देती है। तो एक समझदार मनुष्य का कर्त्तव्य है कि छोटी-मोटी बातों के कारण अपनी इस सर्वोच्च स्थिति को न खो डाले।

देवेन्द्र—हाँ नरेन्द्र जी, मेरे मन में बस यही तो द्वन्द्व चल रहा था और कहाँ तो हमें जाना है सम्पूर्णता के सुखद पथ पर और कहाँ हम इन तुच्छ बातों में अटक गये हैं।

नरेन्द्र—और देखें कि मनुष्य कहाँ गलती करता है जो इस गरम राख में झुलसने लगता है।

देवेन्द्र—अपनी जिद्द भी टकराव का कारण बनती है।

नरेन्द्र—परन्तु जिद्दी मनुष्य मुश्किल से ही समझता है कि वह जिद्दी है। और परिणामतः वह छोटी-छोटी बातों पर बहस करता रहता है। वह किसी को भी नहीं मानता व इसे ही अपनी दृढ़ता समझ कर अपने विवेक में अहं को घोल डालता है। उसकी बहस प्रत्येक छोटी बात को बड़ा कर देती है, राई पहाड़ बन जाती है और फिर उसे तोड़ने में शक्तियों का ह्रास···

देवेन्द्र—हाँ जितना हो सके हमें इन बातों से दूर जाना होगा और किसी भी बात को तुरन्त वहीं पर समाप्त करना भी सीखना पड़गा।

नरेन्द्र—इसके अतिरिक्त, कईयों की आदत होती है, प्रत्येक बात में समस्या खड़ी कर देने की। परन्तु हमें सदा समाधान खोजना चाहिए। जो व्यक्ति समस्याएँ खड़ी करते हैं वे मानो इस रुद्र यज्ञ में विघ्न डालते हैं और इस कारण उन्हें जीवन में कभी भी सफलता या सन्तोष प्राप्त नहीं होता।

देवेन्द्र—हाँ, आये तो इसीलिए थे कि सम्पूर्ण रूप से सहयोगी बनेंगे परन्तु अड़ाने लगे टाँग तो परिणाम तो बुरा होगा ही।

नरेन्द्र—हमें प्रत्येक परिस्थिति में यही सोचना चाहिए कि यहाँ पर अच्छे से अच्छा क्या किया जा सकता है।

देवेन्द्र—फिर भी जब समय पर कोई सहयोग नहीं देता तो कठिनाई तो होती ही है इसलिए कभी-कभी क्रोध भी आ ही जाता है।

नरेन्द्र—हाँ कई बार इस तरह की कठिनाई आ जाती है, परन्तु अपनी स्थिति बिगाड़ने से तो कठिनाई बढ़ेगी ही। ऐसे में बहुत धैर्यवत् होकर उनके प्रति भी शुभ-भावनाएँ रखने से, हमारी यह सूक्ष्म सहयोग की भावना उन्हें बरबस सहयोगी बनने के लिए बाध्य करेंगी।

देवेन्द्र—बात तो ठीक है, परन्तु उस समय शुभ-भावनाएँ रहती कहाँ हैं !

नरेन्द्र—हमें अपनी श्रेष्ठ स्थिति के महत्व को अच्छी तरह समझना चाहिए। कुछ भी होने पर हम अपनी इस अमूल्य निधि, श्रेष्ठ स्थिति को न गवाएँ। जो स्थिति के महत्व को जानते हैं, वे सब कुछ सहन करके भी, सब कुछ त्याग करके भी, सब कुछ सुनकर भी, स्वयं को टकराव से बचाते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि टकराव में आने से आत्मा की शक्तियाँ तेजी से नष्ट होने लगती हैं।

देवेन्द्र—ये सिद्धान्त अति सुन्दर व प्रेरक हैं। और भी कुछ उपाय बताइये जो हम इस भयंकर विघ्न से बचें।

नरेन्द्र—देखो देवेन्द्रजी, टकराव-ग्रसित आत्मा स्नेह की प्यासी हो जाती है। वह चाहती है कि कोई उससे स्नेह से बातें करे, कोई उसके दिल की बात सुने। परन्तु वह आत्मा कभी भी यह महसूस नहीं कर पाती कि मुझे भी दूसरों से स्नेह से ही व्यवहार करना चाहिए।

देवेन्द्र—यदि यह ही बात समझ लें तो फिर टकराव ही क्यों हो !

नरेन्द्र—और एक यह भी मुख्य बात है कि प्रत्येक मनुष्य ने दूसरों के लिए अपने मन में एक दृष्टिकोण बना लिया है, फलस्वरूप वह उसी दृष्टि से सबको देखता है, उसी रूप से सबसे व्यवहार करता है और यह भावना ही टकराव का कारण बनती है। हम तो अपना दृष्टिकोण अपने सीमित विचारों के कारण बनाते हैं, परन्तु हो सकता है दूसरे ने स्वयं को बदल लिया हो या वह उससे महान हो जैसा हम उसे समझते हैं।

देवेन्द्र—परन्तु बाबा ने भी तो अपने महावाक्यों में यही कहा है कि अब तो तुम सबके संस्कार स्वभाव को जान गये, उससे तदानुसार ही व्यवहार करो।

नरेन्द्र—यह बात दूसरी है। पहली बात का महत्व यह है कि हम दूसरों के प्रति अपना दृष्टिकोण ऊँचा रक्खें। और इस बात का अर्थ है कि दूसरों के गुणों व स्वभाव के अनुसार सहयोग लें और जो बात उन्हें अच्छी नहीं लगती, वह न कहें।

देवेन्द्र—परन्तु मनुष्य का स्वभाव ही दूसरों पर टीका करना हो गया है।

नरेन्द्र—हम दूसरों की टीका करके तो सन्तोष महसूस करते हैं, परन्तु यदि कोई हमारी टीका करता है तो हम उबल पड़ते हैं। तो हमें यह भी तो सोचना चाहिए कि जिनकी टीका हम करते हैं उन पर क्या बीतती होगी।

देवेन्द्र—तो संक्षेप में हम यही कहें कि हम नम्रता का व्यवहार करें, दूसरों की सदा गलती ही न निकालते रहें, दूसरों पर सदा आर्डर ही न करते रहें, उनसे समानता का दृष्टिकोण रक्खें, जरा धैर्य धारण करें तो इस टकराव से बच सकते हैं।

नरेन्द्र—इसके अतिरिक्त अपना कार्य पूर्ण करें। ऐसा अलबेलापन दिखायें ही नहीं जो किसी को कुछ कहना पड़े और यदि हमने गलती की है तो हमें सुनने के लिए तैयार रहना चाहिए यानि "सुनने की शक्ति" आवश्यक है।

देवेन्द्र—हाँ, भाई, इस शक्ति की चारों ओर बड़ी कमी दिखाई देती है। **सुनना कोई भी नहीं चाहता, सुनाना सब चाहते हैं।**

नरेन्द्र—और जब कोई बार-बार हमारी ग्लानि करता है, हमारे पीछे ही पड़ा रहता है तो भी हमें यही समझना चाहिए कि हमारा कर्मों का बन्धन हल्का हो रहा है। और वास्तव में तो हमारी ऐसी स्थिति हो कि—**"जैसे महिमा के बोल हमें सुख देते हैं, वैसे ही निन्दा के बोल भी सुख दें।"**

देवेन्द्र—यह तो बड़ा ही ऊँचा दृष्टिकोण है। आपकी बातों से मुझे पूर्णतया मेरी अपनी भूलों का एहसास हो गया। अब मैं स्वयं को बदलूँगा दूसरे

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आध्यात्मिकता ही क्यों ?

ब्र० कु० उर्मिला, कुरुक्षेत्र

समस्याओं से जूझता आज का जन-जीवन जब किसी आध्यात्मिकता प्रिय व्यक्ति से यह सुनता है कि सभी समस्याओं का हल परमपिता परमात्मा से सीधा सम्बन्ध जोड़ने से और कि जीवन में आध्यात्मिक खुशबू भरने से हो सकता है तो वह प्रश्न कर उठता है—आध्यात्मिकता ही क्यों ? परमात्मा का नाम, परमात्मा की सहायता, परमात्मा का ज्ञान ही क्यों सर्व समर्थ साधन है, क्या मानव और मानव का बौद्धिक ज्ञान इन समस्याओं को हल करने में पूर्णतः असमर्थ है ?

इस प्रश्न के उत्तर में हमें यह विश्लेषण करना होगा कि मानव कौन है ? मानव के अन्दर कौन-कौन सी शक्तियां कार्यरत हैं ? यह तो हम सभी जानते हैं कि जब दो सत्ताएं—आध्यात्मिक सत्ता जिसका प्रतिनिधित्व आत्मा करती है और भौतिक सत्ता जिसका प्रतिनिधित्व शरीर करता है—मिल जाती है तो मानव बनता है। जिस प्रकार से कोई व्यक्ति लेखक तब कहलाता है जब कलम का और उसका मेल हो जाता है। अगर व्यक्ति अपनी जगह है और कलम अपनी जगह पड़ा है अर्थात व्यक्ति ने कलम को अपने हाथ में नहीं उठाया हुआ है तो लेखन कार्य के लिए दोनों ही व्यर्थ सिद्ध होंगे। इसी प्रकार अगर आत्मा और शरीर भी जब तक मिलकर एक नहीं हो जाते, जीवन के नाम से दोनों ही व्यर्थ हैं अर्थात् जीवन रूपी क्रिया नहीं होगी।

यह तो है एक स्थिति जिसमें मेल न होने के कारण क्रिया नहीं हो रही है। लेकिन एक दूसरी स्थिति भी होती है। जिसमें मिलाप भी हो जाता है, क्रिया भी हो रही होती है परन्तु क्रिया सही रूप से नहीं हो पा रही है। क्योंकि क्रिया के सही रूप से होने के लिए जरूरी है कि साधन और साध्य दोनों ही सही रूप में हों। जैसे व्यक्ति के दिमाग में जो लिखा जाना है वो स्पष्ट हो और कलम में स्याही हो और चल रही हो। दोनों में से एक में भी डिफेक्ट (Defect) होगा तो क्रिया परफेक्ट (Perfect) नहीं होगी। जैसे कि व्यक्ति के दिमाग में कुछ नहीं है तो वह अर्थहीन लकीरें खींचता रहेगा और अगर कलम में स्याही नहीं है तो लेखक समर्थ होते भी कागज पर बहुत कुछ उतार नहीं सकेगा। ऐसी परिस्थिति में वह मात्र नाम का लेखक रह जाएगा लेकिन लेखक के कार्य को सही अर्थों में नहीं निभा पाएगा।

यही बात आत्मा और शरीर पर भी लागू होती है। जीवन को सही अर्थों में चलाने की क्रिया तब होती है जब आत्मा और शरीर दोनों ही अपने-अपने गुणों से भरपूर हों। आत्मा के मूल गुण—सुख, शान्ति, पवित्रता, आनन्द, प्रेम, सद्भाव, उसमें भरे हुए हों और शरीर स्वस्थ हो, इसकी हरेक कर्मेन्द्रिय अपने सही रूप में हो और आत्मा द्वारा दिये गए आदेशों को पूरा करने में समर्थ हो तब जीवन को सही अर्थों में जीने की क्रिया पूरी होती है।

परन्तु वर्तमान परिस्थितियों में हम देख रहे हैं कि साधन और साध्य दोनों ही बिगड़ गए हैं अर्थात् अपनी मूल स्थिति से गिर गए हैं। आत्मा अपनी पवित्रता, सुख, शान्ति, खो बैठी है और उसका सारा ध्यान शरीर, शरीर की क्रियाओं अर्थात् भौतिकता पर केन्द्रित हो गया है। और आत्मा की समस्याओं का समाधान करने के लिए भी हम भौतिकता का ही सहारा ले रहे हैं। अगर शरीर थका हुआ है तो उसको नरम गद्दों पर सुलाकर आराम दिया जा सकता है परन्तु थकी-मांदी आत्मा नरम गद्दों पर सो कर भी चिन्तित और

अशान्त ही बनी रहेगी। क्योंकि आत्मा आध्यात्मिकता का प्रतिनिधित्व करती है इसका इलाज भी आध्यात्मिक ढंग से ही होगा जैसे भौतिकता का प्रतिनिधित्व करने वाले शरीर को भौतिक पदार्थों से आराम मिल जाता है।

अब प्रश्न उठता है कि यह आध्यात्मिकता क्या है? कैसे मिलती है? आध्यात्मिकता माना आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध जुटना ताकि उसमें शक्तियों और गुणों का प्रवाह हो सके। आप यह भी कह सकते हैं कि प्यार, शान्ति, आनन्द मनुष्यों से भी तो मिल सकते हैं इसके लिए भगवान ही क्यों आवश्यक है? इसमें कोई सन्देह नहीं कि मनुष्य प्यार, स्नेह देने में समर्थ है परन्तु यह प्राप्ति अल्पकाल के लिए होती है और यथाशक्ति होती है, क्योंकि कोई भी मनुष्य सम्पूर्ण सुखी, सम्पूर्ण आनन्द और गुण स्वरूप नहीं है। वह जब स्वयं ही सम्पूर्ण नहीं तो दूसरों को क्या बनायेगा। जो खुद भूखे पेट हो वह दूसरों के पेट नहीं भर सकता। जैसे सूखी नहर का सम्बन्ध आपने किसी छोटी सी नदी से जोड़ दिया तो उसमें पानी तो आ जायेगा पर ज्यों उसका साधन खत्म हुआ उसकी भी समाप्ति हो जाएगी। पर यदि सागर से सम्बन्ध जोड़ दिया तो वह कभी भी सूखेगी नहीं। इसी प्रकार आत्मा को भी सही रूप में लाने के लिए उसको अविनाशी गुणों के भण्डार परमात्मा से जोड़ना होगा और जब वह अपने में पूर्ण आध्यात्मिकता भर लेगी और शरीर को साधन मानकर इसे चलायेगी तो जीवन जीने की क्रिया सही अर्थों में होगी। नहीं तो एक भी चीज की अधिकता होने से सन्तुलन बिगड़ जायेगा। भौतिकता को त्याग कर कर्म विहीन होकर जंगलों में जाकर बठने से भी विश्व नहीं चलता और आध्यात्मिकता के अभाव में प्रम, सुख, शान्ति, आनन्द से रहित जीवन भी सारहीन हो जाता है। भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि कभी यहां भौतिकता और आध्यात्मिकता अपनी चरम सीमा पर थी और इसी समय के भारत का गायन है कि देवी देवता यहां निवास करते थे, घी-दूध की नदियां बहती थीं, भारत सोने की चिड़िया थी। अतः इसी आदर्श भारत को पुनः अस्तित्व में लाने के लिए जीवन में आध्यात्मिकता को जोड़ना अत्यन्त आवश्यक है।

○

पावन दृष्टि से पावन सृष्टि

(पृष्ठ २७ का शेष)

पावन दृष्टिवालों से ही पावनता की वृष्टि

अन्त में एक दो को दुख देने वाली कांटों की सृष्टि जो आज कामाग्नि तथा क्रोधाग्नि में जलकर खाक हो चुकी है, इस पर पावन दृष्टि वाली महान् आत्माओं से ही शीतलता तथा पावनता की वृष्टि अर्थात् बरसात होगी। जिससे सृष्टि एकदम शीतल बन जायेगी। और इसी पावन सृष्टि पर रंग-बिरंगी खशबूदार आत्माओं रूपी अल्लाह का बगीचा महक उठेगा। पावनता की इस शीतल छाया में अनेक तड़पती रूहों को सच्चा आराम मिलेगा तथा उनकी जन्म-जन्म की थकान मिटेगी। अतः स्वयं सर्वस्व प्राप्ति के लिए व विश्व सेवा की सफलता के लिए पावनता से रूह का शृंगार करें।

टकराव-जीवन का बिखराव

(पृष्ठ ६ का शेष)

बदलें—इसकी इन्तजार नहीं करूँगा।

नरेन्द्र—मुझे भी यह सुनकर हर्ष हुआ। वास्तव में एक ही मन्त्र है—यदि हम अपने पुरुषाथ की धुन में लग जाएँ तो इस टकराव से होने वाले बिखराव से भी बच जाएं। नहीं तो यह हमारे जीवन में भी बिखराव लाता है, क्लास में भी बिखराव लाता है और हमारे परिवारों में भी बिखराव लाता है। अतः इसे आत्मा का घातक मानकर समाप्त कर देना चाहिए।

देवेन्द्र—आपने मुझ दीपक को रोशनी दी। बहुत-बहुत धन्यवाद।

नरेन्द्र—आप तो विश्व को प्रकाश देने वाले हो। अच्छा···ओमशान्ति···

○

ये हैं संस्मरण उस यात्रा के

ब्र० कु० अवतार, माउण्ट आबू

२७ अगस्त सन् १९८५ ई० का वह दिन आज भी बार-बार इस स्मृति पटल पर उभर आता है जब पुरातन चिन्तकों अथवा ऋषि-महर्षियों की तपस्या स्थली अरावली की घाटियों की दहलीज पर बसे अन्तराष्ट्रीय पर्यटकों के मन मोहने वाले प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण इस पर्वतराज आबू और उसमें भी सहस्रों राजयोगियों की तपस्या स्थली एवं ईश्वरीय कर्म भूमि, दिव्य चरित्र भूमि, वरदान भूमि मधुबन से महान पुण्य-पुनीत आत्माओं के श्रेष्ठ कामनाओं और शुभ भावनाओं को साथ लेकर चल पड़ा था वह भारत एकता युवा पदयात्रा दल उस क्रान्ति युक्त आध्यात्मिक आन्दोलन को लेकर जिसका ध्येय था सांप्रदायक सद्भावना अथवा राष्ट्रीय एकता बनाये रखना, मानवीय नैतिक मूल्यों की सुरक्षा विशेष कर युवा वर्ग में जो असीम शक्ति संनिहित है, उसका प्रलयकारी गति विधियों में दुरुपयोग न करके निर्माणात्मक कार्यों की प्रवतियों में सदुपयोग करना।

इसी प्रकार मानव मन में परस्पर स्नेह, सहानुभूति, और भ्रातृत्व की पुनीत भावना को उजागर करना तथा मायामय बुराइयाँ जिन्होंने मानवीय मस्तिष्क को विकृत कर दिया एवं अपनी दासता की जंजीरें उसके सिर पर लटका ली हैं, उनसे मानव को विमुक्त करना या यों कह लो कि समाज में व्यापक दुश्परिणित कुरीतियों का उन्मूलन करना। स्मरण रहे कि सामाजिक कुरीतियों में जन-संख्या वृद्धि, दहेज प्रथा, बाल-विवाह और अश्लील फिल्में तथा अश्लील साहित्यादि शामिल हैं। और हाँ तम्बाकू, मद्यपान और अन्य नशीले पदार्थों का सेवन तो प्रथम पंक्ति में उल्लेखनीय हैं।

आइये अब हम पुनः तनिक-सी अवधि के लिये वापस आये उस अद्वितीत पुनीत स्थान पर जहाँ से सहज राजयोगी श्वेत वस्त्रधारियों का वह विशाल जन समूह कूच कर गया था जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु। इस प्रकार हम आबू के प्रमुख-प्रमुख क्षेत्रों से होते हुए नगर की सीमा को पार कर गये।

आगे अंग्रेजी के अक्षर जैड की सी आकृति वाले पेचीदे मोड़ो वाली सड़क को तय करते-करते हरियाली से भली-भाँति लदे तरुवरों की घनी छाँव तले—प्राकृतिक सौन्दर्य की उन अद्भुत छवियों को हृदय पटल पर समाहित करते हुए तथा ईश्वरीय स्मृतियों का सुखद आनन्द लेते हुए हम आबू रोड पहुँचे और समस्त कार्यक्रमों से निवृत होकर ठीक ११-३० बजे रात्रि को विश्राम शैय्या के दर्शन किये।

अगले दिन प्रातः जब नींद से आँखें खुलीं घड़ी की सुइयाँ दो बजाने में मात्र १०-१२ मिनटों की देर बता रही थी। बस यही दिनचर्या पूरी यात्रा के लिये हमारी नियुक्त हो गयी। तात्पर्य यह कि प्रातः दो बजे उठना तीन बजे तक अपने आवश्यक कार्यों से निवृत होना और फिर ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास एवं ईश्वरीय महावाक्यों का पठन-पाठन और श्रवण, चिन्तन ! जब हम अगले आयाम अथवा पड़ाव के लिये प्रस्थान करते थे उस वक्त ठीक चार बज चुके होते थे, आगे मार्ग में या रास्ते के इर्द-गिर्द जो भी गाँव आते थे उन गाँवों में जाकर वहाँ की जनता से बुराइयाँ अथवा कुव्यसन (जैसे कि तम्बाकू, शराब तथा अन्य नशीली वस्तुयें, अश्लील साहित्यादि) छुड़ाकर उन्हें ईश्वरीय सन्देश रूपी प्रसाद देकर आगे का

रास्ता तय करते थे।

ऐसे हम आगे चलते रहे अपनी मंजिल की ओर और हाँ ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते गये त्यों-त्यों पाँवों में छाले भी अपना रंग लाते गये। और वीरान तथा उजाड़ भी···लेकिन हौसले बुलन्द थे। भाव यह कि जितना अधिक परिस्थितियाँ बढ़ती गयी उतना ही अधिक उमंग उत्साह में भी तीव्रता आती गयी।

आगे प्रवेश कर गये हम भारत के उस सबसे बड़े मरुस्थल (रेगिस्तान) में ! जहाँ ऊपर से तपती हुई धूप और नीचे से जलती हुई रेत, छाया के नाम से तो पेड़ों के दर्शन हो दुर्लभ और पानी का तो मानों अकाल ही पड़ चका हो। यद्यपि नदियाँ तो हमने कई पार की हैं किन्तु बिना पानी की !

एक बार की बात मुझे याद है कि किसी गाँव में जाने के लिये लगभग १० किलोमीटर की दूरी हमें कच्चे रास्ते से तय करनी थी। पैरों में बहुत अधिक छाले पड़ जाने के कारण जता नहीं पहना जा रहा था, अतः मैं चप्पल पहन कर ही सफर कर रहा था। उस जलती रेत में पाँव कम से कम छः इंच अन्दर घस जाते थे यहाँ तक कि कहीं-कहीं पर तो चप्पल भी अन्दर ही रह जाती थी और फिर रेत को इधर-उधर हटाकर चप्पल को ढूँढ़कर निकालते थे और पुनः अपना क्रम जारी···।

एक बार किसी गाँव में जब अमृतवेले यही चार बजे हम चल रहे थे उस वक्त दो नवयुवक मिले उन्होंने यात्रा का ध्येय पूछा—उद्देश्य को स्पष्ट करने हेतु मुझे ही निर्देश मिला और रैली आगे चलती रही। नौजवानों से सवाल-जबाब करते-करते मुझे यही कोई आधा घण्टा लग गया।

तब तक यात्रा लगभग तीन किलोमीटर दूर पहुँच चुकी थी। एक तो रास्ता अनजान दूसरा गाँव का अन्धेरा किन्तु फिर भी मैं जब हिम्मत रख कर दौड़ने लगा तो पीछे से कुत्ते भौंकते हुए भागे···। अब तक तो मात्र कुत्तों के ही काटने का भय था किन्तु कुत्तों की आवाज के कारण एक और नयी समस्या ने मुझे आ घेरा ये कि गाँव से बाहर एक स्थान पर यही दो-तीन घर थे। बस वहीं से आवाज आयी चोर-चोर···और इसके साथ ही पत्थरों की बौछार भी। बस अब तो बाबा ही मालिक था···एक मैं अकेला दूसरा एक दूसरे की भाषा को समझना मुश्किल किन्तु उस भयानक माहौल में मैं बाबा को याद करता रहा···।

जिसका सत्परिणाम यह हुआ कि उस स्थिति में भागने की अपेक्षा रुक जाना ही मैंने मुनासिब समझा क्योंकि उस अन्धेरे में भागने से तो पत्थर ही खाने पड़ते और फिर तो रैली के बजाय हस्पताल ही ढूँढ़ने की नौबत आ जाती। खैर जब मैंने आवाज दी कि मैं चोर नहीं हूँ और स्वयं ही आपके पास आना चाहता हूँ किन्तु शर्त यह कि आप पत्थर फेंकना बन्द कर दो। मेरी बातों पर यद्यपि उन्हें विश्वास तो नहीं हुआ किन्तु काफी अनुनय-विनय के बाद तथा बाबा (परमपिता शिव परमात्मा) की मदद से वह माने तथा उन्हें अपना अथवा यात्रा का परिचय दिया गया तथा पीछे रहने के कारण से भी अवगत कराया गया और ईश्वरीय सन्देश भी···अन्त में उनमें से दो भाई मेरे साथ हो लिये और वहाँ छोड़ आये जहाँ यात्रा दल था।

इसी प्रकार एक बार अमतवेले यही चार बजे हम किसी शहर में सैन्य क्षेत्र से जा रहे थे। सभी मौन···ईश्वरीय स्मृति में अतीन्द्रिय सुखों का अनुभव···। इस स्थिति में रफ्तार भी तीव्र थी न जाने क्यों ? सैना को कुछ शंका हुई और वे कुछ ही क्षणों में तैयार होकर हमारे पीछे चल दिये। ट्रकों पर सवार होकर आगे उन्होंने हमें घेर लिया। हम निर्भीक और निश्चिन्त आगे बढ़ते रहे···वे समझ गये कि यह तो कोई महान आत्मायें हैं और लोक सेवा इनका ध्येय है।

आगे उन्हें पद यात्रा से सम्बन्धित पर्चे दिये गये, सैनापति को यात्रा का उद्देश्य भी बतलाया गया और ईश्वरीय साहित्य भी भेंट किया गया जिससे प्रभावित होकर सैनापति ने धन्यवाद के साथ-साथ सलामी भी दी और इस प्रकार कइयों

की सलामी के साथ हमने विदाई ली। आगे उन्होंने यह भी कहा कि जैसे हम मिल्ट्री हैं वसे ही आप भी किन्तु अन्तर इतना है कि हम देश के पुजारी हैं और आप देश तथा ईश्वर के···।

एक बार कुछ अपनी लापरवाही तथा जल-वायु परिवर्तन के कारण मुझे बुखार आ गया। मैंने चुपचाप तापमान मापक यंत्र (थर्मामीटर) लगाया और देखा कि तापमान १०३ डिग्री है। किसी को नहीं बतलाया कारण कि मुझे भय था कि बता दिया तो हमें जीप में बैठा दिया जायेगा किन्तु धीरे-धीरे सभी को मालूम तो हो ही गया किन्तु साथियों के लाख कोशिश करने पर भी मैं जीप में नहीं बैठा। तात्पर्य यह कि बाबा की किस तरह मदद थी और कैसी अद्‌भुत शक्ति बाबा ने हममें भरी उसका पाठक स्वयं हो जायज़ा लगा सकते हैं। ११ बजे रात्री को सोना प्रातः १-३० या २ बजे उठ जाना, ४०-४५ और ५० किलोमीटर तक पैदल चलना तथा सारे दिन अन्य भी कई प्रकार की सेवाओं में व्यस्त रहना तथा इसके साथ ही १०३ डिग्री बुखार का होना। इस स्थिति में भी निराश, हताश या थकावट जैसी बुराइयों से कोसों दूर रहना और खेल सा अनुभव करना! यह सब कमाल किसकी? क्या कोई देह-धारी मनुष्य ये सब कुछ कर सकने में समर्थ हैं?

जवाब बिल्कुल सीधा और स्पष्ट है कि नहीं। बस मात्र उस सर्वशक्तिवान बाप की मधुर अनु-कम्पित छत्रछाया का हाथ हमारे सिर पर पल प्रति-पल विद्यमान था जिसका यह सत्परिणाम हुआ। बस बाबा की ही कमाल थी जिसने उस क्विलिष्टतम वातावरण में भी खेल-खेल में ही हमें चलाते हुए ले गया। बस ऐसा महसूस होता था कि हम चल नहीं रहे हैं अपितु उड़ रहे हैं। और यदि चल रहे हैं तो हमारे प्रत्येक कदम के नीचे बाबा अपनी हथेली रखकर हमें चला रहे हैं।

इसी प्रकार रात्री २ बजे के घनघोर अन्धेरे में मोमबत्ती या टार्च का लाइट से दाढ़ी बनाना और लालटेन के धुंधले प्रकाश के सहारे लिखना और वह भी घण्टों तक के तो हम अच्छी तरह अभ्यासी हो चुके थे। ऐसे ही रेत या पत्थरों के ऊपर सोना भी हमारे लिये एक साधारण-सी बात हो चुकी थी।

इस सन्दर्भ में एक बात याद आयी। एक बार किसी गाँव में हम सरपंच के घर में ठहरे। जगह सीमित होने के कारण बहिनें तो अन्दर कमरों में सो गयीं और भाई बाहर वराण्डे में। शेष हम दो-चार भाई बाहर आंगन में नीम के पेड़ की छाँव तले की रेत पर। बस लेटते ही नींद ने शरीर पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया और हम स्वप्नों के संसार में स्वर्गिक सुखों को आभासित करने लगे मानो तीन साढ़े तीन घण्टे पल भर में ही बीत चुके हों।

जब आँखें खुलीं तो पूरे शरीर में कुछ प्राणी ऐसे विचरण कर रहे थे जैसे मानों बेशुमार मृगों (हिरणों) का झुण्ड किसी अभयारण्य में। या टिड्डियों का दल लहलहाते खेतों में। वे प्राणी बुरी तरह से शरीर को काट भी रहे थे किन्तु मुझे उस आधी नींद में स्वयं पर यह भरोसा नहीं हो पा रहा था कि मैं जाग चुका हूँ या सपने में ही यह सब कुछ हो रहा है।

आगे जब आँखें मसलते हुए मैंने इधर-उधर देखा तो सभी सोये हुए थे। इतने में जब शरीर पर मैंने हाथ फिराया तो चीटियाँ ही चीटियाँ हाथ में। अहो···अब···बड़ी मुश्किल से सारी चीटियों को उतारा स्नानादि से निवृत हुआ किन्तु देखते ही देखते शरीर में सूजन आ गयी यहाँ तक मुँह भी सूज गया और दोनों आँखें भी···। लेकिन मन तो पूर्णतः स्वस्थ था तथा ईश्वरीय स्मृतियों का सुखद आनन्द भला महसूस होने देता क्या इन बच्चों की सी बातों को। बस यही कारण था कि उस स्थिति में भी हम पूरा-पूरा चले अन्य साथियों के साथ बाबा की छत्रछाया में···।

अनुभव तो अनेकों हैं किन्तु स्थान विस्तार के भय से उन्हें यहाँ उल्लिखित किया जाना सम्भव नहीं है। अन्त में यह कहना भी आवश्यक होगा कि

जो इस यात्रा के द्वारा सेवायें हुई उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है। यह यात्रा ५८ दिनों में २१० गाँवों, शहरों, उपनगरों और कस्बों से होती हुई १५७० किलोमीटर की दूरी तय करके २३ अक्टबर सन् १९८५ को दिल्ली पहुँची और बाबा के सहस्रों आशा के दीपकों, शक्तिशाली संकल्पों के धनी साहसी वीरों तथा त्याग, तपस्या और सेवा की साक्षात मूर्तियों के साथ शामिल होने का अहो सौभाग्य प्राप्त हुआ। जो कि राष्ट्र के विभिन्न कोनों से सहस्रों किलोमीटर की दूरियाँ तय करके सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचे थे। तदन्तर दिल्ली में सामूहिक रूप से विजय पताका फहराया।

आबू से दिल्ली की यात्रा के अन्तर्गत सार्वजनिक सभाओं, व्यक्तिगत जन संपर्कों, पत्र, पत्रिकाओं एवं प्रदर्शनियों द्वारा ८२,९६,६४८ आत्माओं ने ईश्वरीय सन्देश प्राप्त कर स्वयं को लाभान्वित किया जिसमें १०४३२ लोगों ने प्रतिज्ञा पत्र भरे तथा स्वयं के वर्तमान को सुखद एवं भविष्य को उज्ज्वल बनाने की सत्प्रेरणायें लीं। इसके अतिरिक्त १६ पत्रकार संगोष्ठियाँ, ५ रेडियो वार्तायें एवं दो दूरदशन कवरेज भी हुई। शेष ग्रामीण के स्नेह, सहयोग, और सद्भावनाओं की तो बात ही निराली है जिसका आने वाले भविष्य में फिर कभी उल्लेख करेंगे। ○

"बदला न लो युवकों····
बदलकर दिखाओ !

ब्र० कु० प्रकाश—भोपाल

काँटों में पलकर तुम फूल बन जाओ,
बदला न लो युवको···बदलकर दिखाओ।
ये जीवन तपाया है जिसने आग में,
सोना बनकर निखरा वही बाद में।
जीवन ईश्वर को दिया जिसने त्याग में,
सितारे चमके सदा उसके भाग में।
तरह दीपक की, तुम भी तो जलकर दिखाओ,
बदला न लो युवकों···बदलकर दिखाओ॥१॥
धरती माँ को देखो बोझ औरों का उठाती,
खुद कुछ न लेती, अपना सब कुछ लुटाती।
आकाश की भी देखो, है बड़ी कितनी छाती,
सारी दुनिया जिसकी छाया में मुस्कराती।
तरह बर्फ की, जरा तुम पिघलकर दिखाओ,
बदला न लो युवको···बदलकर दिखाओ॥२॥
है सूरज सा कोई, क्या तप करने वाला,
स्वयं तपता, देता औरों को उजाला।
सागर का धीरज भी, अजब और निराला,
समा लेता सबको नदी हो या नाला।
चाँदनी की तरह तुम निर्मल बनकर दिखाओ,
बदला न लो युवको···बदलकर दिखाओ॥३॥

बंगलोर में दीपावली महोत्सव पर ब्र. कु. सुन्दरी जी ईश्वरीय सन्देश देते हुए। पीछे बैठे हैं भ्राता एस० वी० रंगा स्वामी (प्रेसीडेन्ट कर्नाटक चैम्बर आफ कामर्स एन्ड इन्डस्ट्रीज) और बहन कमलामा प्रिन्सिपल।

कन्याकुमारी से दिल्ली पदयात्रा के ब्यावरा आगमन पर आयोजित युवा समारोह में बोलते हुए डि० सेशन्स जज भ्राता बी० पी० श्रीवास जी।

यह चित्र मिरज में नये उप-सेवाकेन्द्र के उद्घाटन अवसर का है इसका उद्घाटन मिरज नगरपालिका के नगराध्यक्ष भ्राता शिवलिंग मगदूम कर रहे हैं।

सोलापुर से पूना पदयात्रा के उद्घाटन। अवसर पर दादी हृदय पुष्पा जी कलश धारण किये हुए।

कविठा में आयोजित युवा जागृति आध्यात्मिक सम्मेलन का उद्घाटन स्वामी मनीषा नंदजी दीप प्रज्जवलित करके कर रहे हैं।

धर्मशाला से देहली युवा पदयात्रियों का पालमपुर शहर में अभिनन्दन किया गया। मंच पर भूतपूर्व मुख्य मंत्री हि० प्र०, शान्ता कुमार जी व एस० डी० एम० भ्राता चमेल सिंह जी बैठे हैं।

शिमला में युवा पद यात्रा के पहुँचने पर सदस्य विधान सभा हरभजन जी तथा भ्राता देवराज नेगी जी अपने साथियों सहित फूलों द्वारा स्वागत करते हुए।

कन्याकुमारी के युवा पद यात्रियों का भव्य स्वागत होडल पहुँचने पर। यह चित्र उसी अवसर का है।

बोकारो स्टील सीटी सेवा केन्द्र की ओर से दुर्गापूजा के अवसर पर चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन वहाँ के एस० डी० ओ० ने किया।

बस्सी मे सोमनाथ के पदयात्रियों के स्वागत समारोह को सम्बोधित करती हुई ब्र. कु. आरती तथा मंच पर अन्य प्रतिष्ठित महानुभाव विराजमान हैं।

सोमनाथ से दिल्ली पदयात्रा के उद्घाटन अवसर पर राज्यपाल भ्राता बी. के नेहरू जी ब्र. कु. अशोक जी को शाल थमाते हुए।

फिल्लौर डी० ए० वी० कालेज में पदयात्रा पहुँचने पर कालेज के प्रिन्सिपल साथ में खड़े हैं।

आजमगढ़ – 'नेपाल भारत युवा शान्ति यात्रा' के अवसर पर आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम में जिला अधिकारी अपने विचार व्यक्त करते हुए।

दिल्ली लाजपत नगर की तरफ से निकाली गयी भारत एकता युवा पदयात्रा का एक दृश्य।

बम्बई (घाटकोपर) सेवा केन्द्र की ओर से चेम्बूर में आयोजित चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन भ्राता हसु अडवाणी ने किया। चित्र में ब्र. कु. नलिनी, ब्र. कु. काकू भाई तथा अन्य भाई दिखाई दे रहे हैं।

यादगिरीगुटा में गुनटूर से आने वाले पद यात्रियों का स्वागत ब्र. कु. लीला, ब्र. कु. शकुन्तला तथा अन्य ब्र. कु. बहन-भाईयों द्वारा किया गया।

पते की बात

–ले. ब्रह्माकुमारी चक्रधारी, दिल्ली

जमाना कितना बदल गया है। पहले लोग कितना मिल जुल कर रहा करते थे। एक-दूसरे के प्रति सबके मन में प्रेम की भावना थी। मनुष्य निःस्वार्थ रूप से एक-दूसरे के सहयोगी बनते, उनके सुख में सुखी, उनकी खुशी में अपनी खुशी महसूस करते थे। किसी गांव का कोई बच्चा बड़ा होकर कोई उच्च पद पर आसीन होता तो सब मिल कर खुशियाँ मनाया करते थे। किसी के मन में न ईर्ष्या थी न द्वेष बल्कि एक-दूसरे को आगे बढ़ाने की लग्न थी। और आज यह भी समय आ गया है कि मनुष्य किसी को आगे बढ़ता देख अपनी खुशी प्रगट नहीं करते, अन्दर ही अन्दर कुढ़ते रहते हैं। इतना ही नहीं, वे उसको भी नीचा गिराने की कोशिश करते हैं। न खुद आगे बढ़ते हैं न दूसरे को आगे बढ़ने देते हैं। दूसरों को गिराने में ही उन्हें मजा आता है। आज के इसी समय से सम्बन्धित मैं एक छोटी-सी कहानी आपको सुनाती हूँ।

कहते हैं कि किसी मोहल्ले में कुछ बच्चे छोटे-छोटे शीशे के मर्तबान लेकर बैठे थे। सभी मर्तबानों पर ढक्कन भी लगा हुआ था और हरेक बच्चे ने अपने-अपने मर्तबान में कोई-न-कोई छोटा मोटा जन्तु, कीड़ा, मच्छर कैद कर रखा था। वे देख रहे थे कि किस प्रकार ये जन्तु उछल-उछल कर मर्तबान से बाहर निकलने की कोशिश करते थे परन्तु ढक्कन बन्द होने के कारण वे निकल नहीं पाते थे। ज्योंही वे ज़रा सा ढक्कन ऊपर करते, तत्क्षण ही वे उछल कर बाहर निकल आते और वे बच्चे फिर उसे पकड़ कर अन्दर बन्द कर देते। इस प्रकार ये बच्चे खेल में मस्त थे।

परन्तु इन्हीं बच्चों के साथ एक बच्चा ऐसा भी था जिसके पास मर्तबान तो था परन्तु उसका ढक्कन नहीं था। उसके मर्तबान में दो केकड़े थे। केकड़े मर्तबान के बीच में उछलते भी थे परन्तु ढक्कन न होने पर भी उस मर्तबान से बाहर नहीं आ पाते थे। सभी बच्चे इस दृश्य को देख बहुत हैरान हो रहे थे। वे सोच रहे थे कि उनके मर्तबान का ज्योंही ढक्कन उठता है, तो मर्तबान में पड़ा जन्तु फौरन उछल कर बाहर आ जाता है परन्तु इसके मर्तबान पर तो ढक्कन भी नहीं है, फिर भी इसके केकड़े बाहर क्यों नहीं आ रहे। वे आपस में खुसर-पुसर करने लगे और कहने लगे कि ये केकड़े ज़रूर कमजोर होंगे तभी तो ढक्कन खुला होने पर भी ये बाहर नहीं आ रहे। आखिर उन में से एक बच्चे ने उस बच्चे से पूछ ही लिया– "क्या तुम्हारे ये केकड़े कमजोर हैं जो मर्तबान पर ढक्कन न लगा होने पर भी ये उससे बाहर नहीं आ पाते?" उसने जवाब दिया– "अरे नहीं, ये तो बहुत बलवान हैं। परन्तु इनके बाहर न आ पाने का भी एक राज़ है।"

"वह क्या राज़ है?"– सभी बच्चे एक आवाज में बोल उठे। उसने कहा– "बात यह है कि ये दोनों केकड़े एक-दूसरे से बढ़कर ताकतवर है। परन्तु जब एक बाहर निकलने के लिए उछलता है तो दूसरा केकड़ा उसकी टाँग खींच लेता है और जब दूसरा केकड़ा छलांग लगाता है तो पहला उसकी टाँग खींच लेता है। और इस प्रकार दोनों ही एक-दूसरे की टाँग खींचते रहते हैं और दोनों में से कोई भी बाहर नहीं आ पाता।"

इस राज़ को सुनकर सभी खिलखिला कर हंस पड़े।

तो देखा बच्चों, ठीक ऐसी ही हालत आज के संसार की है। इस संसार में कई मनुष्य ऐसे हैं जिन्हें आगे बढ़ने का मौका ही नहीं मिलता मानों कि उनका ढक्कन बन्द है। अगर उन्हें मौका मिले तो वे बहुत जल्दी ही उन्नति प्राप्त कर सकते हैं परन्तु चाहे कोई भी वजह हो, उन्हें मौका नहीं मिलता। कुछ मनुष्य ऐसे हैं जिन्हें आगे बढ़ने का मौका मिलता है, वे उसके लिए प्रयास भी करते हैं परन्तु कुछ अन्य ईर्ष्यालु व्यक्ति उनकी टाँग खींच (Leg pulling) लेते हैं अर्थात् उनके प्रयास में वे कोई-न-कोई विघ्न डाल देते हैं। इससे न वे खुद आगे बढ़ पाते हैं न औरों को ही बढ़ने देते हैं।

परन्तु शिव बाबा हम बच्चों को यह शिक्षा देते हैं कि अन्य को आगे बढ़ाने में ही आपका आगे बढ़ना समाया हुआ है। अगर कोई उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता है तो आप उसको देख कर खुश होवो, उसका उमंग-उत्साह बढ़ाओ, उसे सहयोग दो और फिर जब उसके मन से आपके प्रति शुभाशीष निकलेगी तो वह आपको आगे बढ़ाने में बल प्रदान करेगी। अतः ईर्ष्या के संस्कार को भस्म करो। ईर्ष्यालु व्यक्ति न औरों को आगे बढ़ने देता है न खुद आगे बढ़ पाता है तथा जल-भुन कर अपने शरीर और आत्मा दोनों को ही हानि पहुंचाता है।

विचार-सागर से रत्न निकले

ले० ब्रह्माकुमार विश्व रत्न, माउंट आबू

१. लोग श्री कृष्ण को **'मोहन'**, **'मोहन'** कहकर पुकारते हैं। परन्तु यदि वे 'मोहन' शब्द से **मोह-न, मोह-न** समझें तो उनका कल्याण हो जाये। मोह न होने से ही श्री कृष्ण 'मोहन' कहलाये अर्थात् मन को आकर्षित करने वाले बने और इतने महान् हुए। अतः हमें श्री कृष्ण के समान बनने के लिए **'मोह-न'** बनना चाहिये अर्थात् अपनी देह में तथा देह के सम्बन्धों आदि में मोह-ममता नहीं रखनी चाहिये।

२. लोग अपनी **किसमत** का बहुत खयाल करते हैं परन्तु वे **किस-मत** का खयाल नहीं रखते। अर्थात्, वे किस **मत** पर चल रहे हैं, इस पर ध्यान नहीं देते। वास्तव में मन मत अथवा मनुष्य मत पर चलने से ही मनुष्य की किसमत (तकदीर) बिगड़ती है और परमात्मा के मत पर चलने से ही किसमत बनती है। **अतः किसमत (भाग्य) की चिन्ता न करके मनुष्य को किस मत का खयाल रखना चाहिये अर्थात् कर्म करते समय यह देखना चाहिये कि हम किसके मत पर चल रहे हैं—मनुष्य के मत पर या भगवान के मत पर, माया के मत पर या प्रभु के मत पर। मत ठीक होने से किसमत स्वतः ही अवश्य ही ऊँची बनेगी।**

३. जब कोई मनुष्य मर जाता है तो उसे अरथी पर उठाकर श्मशान ले जाया जाता है। वास्तव में यह शरीर रथ है और आत्मा **'रथी'** है। जब आत्मा शरीर छोड़ जाती है तो यह शरीर **'अ-रथी'** (आत्मा-रहित) हो जाता है। इसलिये उसे 'अरथी' पर उठाकर श्मशान ले जाया जाता है।

मनुष्य की उलझन को सुलझाने के लिये परमात्मा के अवतरण की आवश्यकता

वर्तमान समय संसार में परमात्मा के स्वरूप के विषय में अनेक विचार, अनेक शास्त्र, अनेक ग्रन्थ और अनेक वाद हैं। कोई तो कहता है कि परमात्मा है ही नहीं, केवल आत्माएँ ही हैं। अन्य काई कहता है कि आत्माएँ भी परमात्मा के अंश हैं। तीसरा कहता है कि परमात्मा सभी आत्माओं में व्यापक हैं। इस प्रकार अनेक पोथों, भाष्यों, टीकाओं, व्याख्याओं, मतों आदि द्वारा ज्ञान रूपी सूत और ही अधिक उलझ गया है और मनुष्य उसमें जकड़ा पड़ा हुआ परेशान है। मनुष्य नहीं जानता कि इस गुत्थी को कैसे सुलझाया जाय। ऐसी जब स्थिति हो जाती है तब ज्योतिस्वरूप, अकाय परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में दिव्य प्रवेश करके और वास्तविक ज्ञान की शिक्षा देकर मनुष्य को इस उलझन से निकालते हैं। वर्तमान समय ऐसा ही समय चल रहा है। अब परमपिता परमात्मा ज्ञान का सार समझा कर मनुष्य को उलझनों से छुड़ा रहे हैं।

अमृतसर से आरम्भ हुई पदयात्रा के जालन्धर पहुँचने पर हंसराज महिला महाविद्यालय की प्रिन्सिपल बहन खन्ना जी ने स्वागत किया। प्रतिज्ञा पत्र को बड़े ध्यान-पूर्वक सुनते हुए।

फतेहगढ़—परेड ग्राउन्ड में आर० आर० सी० जिला-धिकारी भ्राता के० के० सिन्हा जी ज्ञान कलश पर माला अर्पण करते हुए।

कलकत्ता से देहली आने वाली युवा पद यात्रा का उ०प्र० प्रताप गढ़ में भव्य स्वागत दृश्य।

लखनऊ में पदयात्रा के पहुँचने पर उद्योगपति सुरेश चन्द्र अग्रवाल प्रतिज्ञा पत्र भरते हुए।

पंजाब, हरियाणा और हिमाचल के पदयात्रियों का स्वागत कर रहे हैं मजलिस पार्क क्षेत्र के महानगर पार्षद भ्राता महेन्द्र सिंह जी और चेयरमैन वर्क्स कमेटी (का०) भ्राता मंगत राम जी।

सोलापुर से पूना तक निकाली गई युवा पद यात्रा का एक मनोरम दृश्य ईश्वरीय सन्देश देते हुए आगे बढ़ रहा है।

साइकल रैली के ओखला चशायर-होम पहुँचने पर उनका भव्य स्वागत फूल-मालाओं व गीतों द्वारा किया गया। यह चित्र उसी-अवसर का है।

डूंगरपुर सेवा कन्द्र के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में एक चैतन्य झांकी का रहस्य जेल उप-अधिक्षक बहन प्रीता भार्गव को ब्र. कु. जसवन्ती जी समझा रहीं हैं।

↓

कलकत्ता से देहली पहुंचने वाली युवा पद यात्रा का स्वागत शाहदरा सेवा केन्द्र के ब्र. कु. बहनों व भाईयों द्वारा किया गया।

↓

गाजियाबाद-लोहिया नगर सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित भारत एकता युवा पद-यात्राओं के स्वागत समारोह में मंच पर उपस्थित हैं (दाएं से) ब्र. कु. कमलेश, उषा, सुरेन्द्र जी, सिटी मजिस्ट्रेट भ्राता रामसिंह जी, भ्राता रमेश एवं मन्जू बहन।

भारत नेपाल युवा पद यात्रा के लक्ष्मीनगर-दिल्ली सेवा केन्द्र पर पहुंचने पर स्वागत करती हुई ब्र. कु. पुष्पा जी।

प्रीम्प्राला गांव में जब पदयात्री पहुंचे तो जैसे दिवाली आ गई। गुलाल, लेजियम बैंड की धूम से सारा गांव उमड़ पड़ा चैतन्य देवियों के दर्शन लिये।

ग्राम सेवा अभियान के अन्तर्गत चांदपुर (सिकन्दराओ) ग्राम में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटत करने के पश्चात् ब्र. कु. सीता उ०प्र० के कानून राज्यमंत्री भ्राता सुरेन्द्र सिंह चौहान को सौगात देते हुए।

जामनगर में ब्र. कु. सुषमा बहन जेल में प्रवचन करती हुई। मंच पर वर्तमान मेयर साहब, जिला न्यायाधीश व बहन तन्ना जी बैठे हैं।

घर-कल्याणी नहीं, विश्व-कल्याणी

ब्र० कु० शकुन्तला कानोड़िया, बहल (हरियाणा)

पात्र—मीना—एम० ए० की छात्रा
मीना की मम्मी और पापा

स्थान—मीना का घर

(मीना अपने अध्ययन कक्ष में गहन चिन्तन में खोई हुई है)

मम्मी—मीना, खाना खाओ। कालेज से आकर तूने खाना नहीं खाया है।

मीना—मुझे भूख नहीं है, मम्मी।

मम्मी—क्यों, क्या बात है ? तेरी तबियत तो ठीक है न ?

मीना—तबियत तो ठीक है पर भूख नहीं है। और···

मम्मी—और क्या ?

मीना—और न मेरा पढ़ाई में मन लगता है।

मम्मी—क्यों ? किसी ने कुछ कहा है क्या ?

मीना—नहीं तो।

मम्मी—फिर क्या हुआ ?

मीना—बस बी० ए० कर चुकी इतनी पढ़ाई तो काफी है।

मम्मी—(शायद इसका किसी लड़के से प्यार-व्यार चल रहा है ऐसा सोचते हुए)—देख बेटी, अब तेरे पापा भी इसी चिन्ता में रहते हैं कि कहीं योग्य वर ढूंढ़ कर मीना को···

मीना—(बीच में ही)—मीना को पिंजरे की मैना बना कर के खुद सुख चैन की नींद सोएँ। यहीं ना ?

मम्मी—कोई भी बाप अपनी बेटी के लिए बुरा कैसे सोच सकता है ? और अब तो तू जवान हो गई है। तुझे कब तक घर में बिठाए रखेंगे। आखिर हमें अपना कर्तव्य तो पूरा करना ही है।

मीना—मम्मी, जवानी घुट-घुट कर जीने के लिए नहीं आती, जीवन में कुछ कर दिखाने के लिए आती है।

मम्मी—बेटी, आपने हिन्दु धर्म में तो पति की सेवा, बच्चों की अच्छी तरह परवरिश और घर को कुशलता पूर्वक चलाना—यही नारी का धर्म माना गया है।

मीना—मम्मी, समय परिवर्तन के साथ हमें अपने कर्तव्यों, चिर प्रचलित मान्यताओं और ऊँचे आदर्शों तक के परिवर्तन की आवश्यकता पड़ जाती है। क्या आप नहीं जानती कि स्वतन्त्रता संग्राम में कितनी ही युवातियाँ अपनी पढ़ाई, बाल बच्चे व गृहस्थी की जिम्मेवारी सब त्याग कर आन्दोलन में कूद पड़ी थीं। जिसकी बदौलत आज हम सब स्वतन्त्र बैठे हैं। अगर उस समय हम अपने कर्तव्य और समय को न पहचानते तो क्या आज हम अंग्रेजों से मुक्त हो सकते थे ? आज वही समय की पुकार फिर से गूँज रही है।

मम्मी—(थोड़ा रोष प्रकट करते हुए)—तू अब कौन से आन्दोलन में कूदना चाहती है ? सुनूं तो सही ?

मीना—मम्मी, इस युवा वर्ष के दौरान स्वयं परमपिता शिव ने विश्व को स्वर्ग बनाने के लिए विशेष हम युवाओं का आह्वान किया है। उनका नारा है—आज का युवक कल का देवता। इस समय विश्व में संकटकालीन स्थिति है। अतः विश्व को भ्रष्टाचार, अनैतिकता, अशान्ति, आपसी फट, अमानवीय कृत्यों से स्वतन्त्र करने के लिए स्वयं परमात्मा ने हमारा हाथ मांगा है। और मैंने निश्चय भी···

मम्मी—मीना, आज तू कैसी बहकी-बहकी बातें कर रही है ? आज से पहले तो तूने ऐसा कुछ

नहीं कहा ? सच बताना, यह सब तू कहाँ सुनकर आई है ? और कल तू कॉलेज से भी देर से आई थी ?

मीना—कल जब मैं कालेज से आ रही थी तो 'युवा-जागृति पद-यात्रा' मेन रोड से गुजर रही थी। सच मानो मम्मी जिसमें ३० युवा लड़के और १० लड़कियाँ थीं। सच मानो मम्मी, जैसे सफेद वस्त्रधारी वे फरिश्ते चल नहीं रहे थे बल्कि ऐसा लग रहा था जैसे हंस पंक्ति बान्धे आसमान में उड़ रहे हों। उन्होंने बताया कि सृष्टि को विकारों से मुक्त करने के लिए परमात्मा ने यह रूहानी सेना बनाई है और इस धरा पर सम्पूर्ण सुख शान्ति-मय रामराज्य लाने के लिए हम कृत संकल्प हैं।

मम्मी—(जो आश्चर्य से अभी तक सब कुछ सुन रही थी) थोड़ी आवाज में—अजी सुनते हो अपनी लाडली की बातें ? आप तो कह रहे थे लड़का गजटेड ऑफिसर है, अपनी मीना मौज मनाएगी।

पापा—(पास आते हुए)—और नहीं तो क्या ? खानदान अच्छा है। लड़का अपने माँ बाप की अकेली सन्तान है ?

मम्मी—पर महारानी जी तो स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद रही हैं।

पापा—कैसा स्वतन्त्रता आन्दोलन ?

मम्मी—पूछो अपनी लाडली बेटी से ?

मीना—पापा, जब मैंने बी० ए० की परीक्षा में पूरे विश्व-विद्यालय में प्रथम स्थान लिया तो आपने कहा था ना कि मेरी बेटी संसार में कुछ नया काम करके दिखाएगी और मेरा नाम रोशन करेगी। वह समय अब आ गया है। पापा, अब विश्व परिवर्तन का समय है। सतयुग का आगमन है। और परमपिता परमात्मा सतयुग की स्थापना का सर्वश्रेष्ठ कार्य इसी जग के मनुष्यों से करा रहे हैं। अतः आपको खुश होना चाहिए कि मैं भगवान् की बनाई हुई रूहानी सेना में शामिल हो जाऊँ। घर कल्याणी बनने के बजाय विश्व कल्याणी बनूं।

पापा—(खुश होते हुए)—मीना की माँ, तुम खड़ी क्या देख रही हो ? मिठाई बाँटो जो ऐसी बहादुर लड़की हमारे घर में पैदा हुई है। यह तो हमारा ही नहीं अपनी सात पीढ़ी का भी नाम रोशन करेगी। मैं आज ही लड़के वालों को भी लिख देता हूँ। आप अपने लड़के का रिश्ता चाहे कहीं भी करें, हमारी मीना तो घर कल्याणी नहीं विश्व कल्याणी बनेगी। पर यह तो बताओ मीना, यह सब प्रेरणा तुम्हें कहाँ से मिली ?

मीना—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के युवक और युवतियों ने जन-जन को विकारों से मुक्त करवाने के लिए पूरे भारत में पद यात्राएँ शुरू की हैं जिसमें वे शहरों और विशेष-कर गाँव-गाँव में लोगों से धम्रपान, शराब, नशीली चीजों का सेवन इत्यादि बुराइयों का दान मांग रहे हैं। अपने शहर में भी आज शाम को उनका प्रोग्राम है। आप सम्मुख जाकर उनकी त्याग, तपस्या और ऊँचे लक्ष्य को अपनी आँखों से देख सकते हैं।

पापा—फिर तो हम बहुत ही भाग्यशाली हैं जो इतना ऊँचा लक्ष्य रखने वाले लोगों के विचार आज ही सुनने को मिलेंगे।

मम्मी—फिर तो मैं भी चलूंगी।

पापा—हाँ-हाँ, जल्दी-जल्दी तैयार हो जाओ। हम तीनों ही चलगे।

○

व्यथ की बजाए समर्थ संकल्प चलाओ
अपना वर्तमान तथा भविष्य सदा याद रखो

सीधा-राजपथ

ब्र० कु० रामप्रसाद, बैतूल (म० प्र०)

कल के सुनहरे भारत को आज स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है, कि मानव ने स्वयं अपने हाथों से ही सुनहरे भविष्य को धूमिल कर दिया है। सुख शांति पवित्रता तथा दैवी सम्पदा को तहस-नहस कर दुर्गति पाने में अपने आपको कभी पीछे नहीं रखा, उसका ही परिणाम आज भारत की दुर्दशा का कारण बना। भौतिकता को महत्व देते हुए आज की युवा पीढ़ी ने आध्यात्मिकता का खून कर दिया और मान-सम्मान, एशो-आराम की खुली जेल में अपनी बुद्धि को कैद कर रंग-रूप और अल्लड़ता तथा मस्तीभरे यौवन में मतवाले हो अपने मन को स्वछन्द रूप से खुला छोड़ दिया। जिसके फलस्वरूप वह भटकता चला गया और दोष देता रहा, इस युग को ? इस अनोखे संसार में चाहे ढिंढोरा पीटता फिरे कि उसने यह किया, वह किया सब गलत है। आदमी परिस्थितियों का दास है, विवश है, नियति के हाथों का खिलौना है, वह वही करता है जो उसे करना पड़ता है, वह तो साधन-मात्र है, निमित्त है। नियति ही सब कुछ है—इस प्रकार की विचार-धारा को लेकर इस कलियुग को दोष लगाकर मानव मनमानी कर नियति का मजाक उड़ा रहा है। मानव वास्तविक मौलिक सिद्धान्तों को भूल अपने कर्मों में दानवता, बोलों में कठोरता, आचार-विचार में असभ्यता तथा जीवन में असंतुष्टता का परिचय दे रहा है। इसका मूल कारण भौतिक विचार, नाना प्रकार के मत-मतान्तर, पंथ, असामाजिक तत्व और अज्ञानता ही है। वस्तुतः यह विरोध ही नहीं आभास के आवरण में एक सच्चाई है, वस्तु-स्थिति है। ऊपर दिखाई देने वाले तथ्य, तथ्य हैं सच्चाई नहीं। उन्हें उखाड़कर देखें तो सत्य दुबका हुआ मिलेगा, जो तथ्यों के ठीक विपरीत है। जैसे कई मनुष्य कहा करते हैं, कि मन बड़ा चंचल है। इसे बस में नहीं किया जा सकता। पर यथार्थ रीति से इस पर विचार किया जाय, कि जिस मानव ने बड़े से बड़े पशु पक्षी तथा जानवरों को वश में कर लिया, क्या वह मनुष्य अपने ही मन को वश में नहीं कर सकता। जो दूसरों को बस में कर ले और वह परवश रहे यह तो नामुमकिन है। असंभव को संभव बनाने वाला मनुष्य अपने को परवश महसूस करे यह उसके लिए अशोभनीय है। और कहा भी है :—

"पराधीन सपनेंहू सुख नाही" अर्थात मन के अधीन रह मनुष्य सुख शान्ति की चाहना रखें यह कैसे हो सकता है ? मन को स्वतन्त्र रूप से भौतिक वस्तुओं में, भौतिक सुखों में लिप्त कर सच्ची मन की शान्ति को पाने वाले मनुष्य यह नहीं जानते कि मन की एकाग्रता से ही आहार में सात्विकता, विचार में श्रेष्ठता, कर्मों में महानता, तथा जीवन में संतुष्टता की अनुभूति होती है। अगर मन एकाग्र नहीं होगा तो एक रस स्थिति बन नहीं सकती। ऐसी स्थिति के बीच फंसा हुआ मनुष्य मन के वशीभूत होकर कर्म-विकर्म करते हुए भी अपने को पुण्यात्मा समझता है।

अकसर लोग कहा करते हैं कि "पाप इस दुनिया में कुछ भी नहीं करता है वह उसके स्वभाव को अनुकूल होता है" मनुष्य अपना स्वामी नहीं वह परिस्थितियों का दास है, विवश है। वह केवल निमित्त है फिर पुण्य और पाप कैसा ? हम न पाप करते हैं और न पुण्य करते हैं हम केवल वह करते हैं जो हमें करना पड़ता है। इस प्रकार मनुष्य परिस्थितियों का दास बनकर भला-बुरा करता रहता है। फिर भी मानव आज जैसा है उससे भिन्न दिखाना चाहता है। वह अपने को सदैव महान समझना चाहता है और सोचता है, कि मैं जो कर रहा हूं बहुत श्रेष्ठ कर रहा हूं। पर आज मानव की भावनाओं में स्वार्थपरता, अधमता और हिंसा की सत्ता रहती है इसलिए जो जैसा

दिखाई पड़ रहा है उसके वैसा होने की संभावना जरा कम ही होती है। मनुष्य समझता है कि वह समर्थवान व शक्तिवान है, धनवान है, और जो कुछ भी यहाँ भला-बुरा घटता है सब उसी शक्ति का परिणाम है। काश वह अपनी सीमाओं को भी जान पाता। परिस्थितियों की भी सामर्थ का भी अंदाजा उसे होता तो दुनियां में ऐसा कुछ भी न घटता, जो कि अहं के कारण होता है। उनके समग्र जीवन और कर्मों के तथ्यों के ऊपरी आवरण को भेदकर देखें तो यथाथ रूप में धन ही उसका अस्तित्व है—ईश्वर है।

धन के नशे में चूर मनुष्य कभी पैसों का, कभी बल का तो कभी असामाजिक तत्वों का साथ ले रूप रंग और यौवन की इस रंग बिरंगी दुनियां में अपनी स्थिति समझने को तैयार ही नहीं है। जाति, भेद, धर्म भेद, देश भेद, आदि-आदि समस्याओं को लेकर जीवन में दुःख और अशांति का बीज स्वयं ही बोता और फिर जिंदगी के बेरहम थपेड़ों को खाकर दिल शिकस्त हो भटकता रहता है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है, कि जीवन में कोई सीधा राजपथ नहीं, सभी टेढ़े-मेढ़े रास्ते हैं। जिन रास्तों पर चलकर मनुष्य आज भी भटक रहा है। इस भटक को समाप्त करने के लिए ही परमात्मा आते हैं। जो मानव को सीधा राजपथ दिखाकर सुख-शांति और पवित्रता का अनुभव करा कर पवित्र दुनिया का मालिक बनाते हैं।

मनुष्यों की मत को छोड़ परमात्मा की श्रीमत् पर चल मानव सादगी, संतोष, धैर्य, पवित्रता तथा समानता और विश्व बन्धुत्व की कल्याणकारी भावनाओं को लेकर सच्चे पथ प्रदर्शक शिव बाबा के बताये सच्चे और सीधे राजपथ पर चलकर स्वर्ग के मालिक बनते हैं। अर्थात हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं, कि सतयुगी पावन दुनिया की मंजिल तक पहुंचाने वाला एक परमात्मा का सीधा "राजपथ" ही है।

○

युवकों के प्रति दो शब्द

ब्र० कु० नारायण, रायपुर

जब-जब धरा के मानव पर दुख के अंधकार की गहरी छाया पड़ने लगी, तब-तब उदित हुआ है नवयुवा शक्ति का नव प्रभात—मानव के हृदय स्थल में सुख-शान्ति शीतलता की किरणें बरसाने के लिये।

अब भी विश्व, प्रेम, शांति की रोशनी उदय होने की आशा लगाये बैठा है। तोड़फोड़ के उस विकराल रूप को तज निर्माण बन, नव निर्माण का कार्य तुम्हें ही करना है, प्रेम शान्ति से मानव को अपने श्रेष्ठ कर्त्तव्य के माध्यम से सत्य के नजदीक लाना है। यही तेरा कर्म है और तेरे कर्म का प्रत्यक्ष रूप है।

आज विश्व रचता सर्व के पिता शिव पिता को भी तेरी ही शक्ति की आवश्यकता है। यह अनमोल समय और अनमोल घड़ियाँ हीरे के समान हैं, उस बेहद के बाप शिव पिता परमात्मा को तेरी शक्ति की इंतजार है। हे युवा, तुम भविष्य पीढ़ी के पथ प्रदर्शक हो। माता-बहनों की लाज हो। वृद्ध के आधार हो, बेहद के पिता शिव के सिरताज हो। सारे विश्व की बहार हो, रौनक भी हो, नये स्वर्णिम युग के चैतन्य सितारे भी हो।

सर्व शक्तिवान बाप का परिचय तुझ में है, उनके रचना का स्वरूप भी तुझ में है। उनकी मूरत भी तेरे चेहरे में है। बस विभिन्नता को छोड़ एक राह पर चल भाई-भाई की दृष्टि से विश्व एकता को लाओ। युवा वर्ष में हर जन-जन के मन, नवयुवा के नव प्रभात के किरणों की रौनक छा रही है। युवा वर्ष से विश्व में नयी क्रांति होगी और राम राज्य आयेगा।

○

पावन दृष्टि से पावन सृष्टि

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

सृष्टि परिवर्तन में दृष्टि महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सृष्टि चक्र के आदि काल में हरेक की दृष्टि पावन, सुखदाई तथा स्नेहभाव से सम्पन्न थी, तब सृष्टि भी सतोप्रधान थी। बाद में जैसे-जैसे दृष्टि में गिरावट आती गई तो परिणामतः सृष्टि अपना स्वरूप बदलती गई। विकारी दृष्टि के विकराल रूप ने तो मानवता को नष्ट करके सभी को कामी बनाकर दर-दर भटकाया है, लाखों को भिखारी बना दिया है; कईयों को जिंदा जला दिया है; कई परिवार के परिवार नष्ट कर दिये हैं; कईयों को पागल बना दिया है; दिन-दहाड़े बलात्कार करने की कामवासना को उत्तजित करके हजारों के जीवन को धूल में मिला दिया है। मानो कि इस विकारी दृष्टि के प्रताप ने इस संसार को वेश्यालय ही बना दिया है।

इतना ही नहीं, शहर-शहर में मनुष्यात्माओं की विकारी दृष्टि से विकार रूपी जहर के नहर बह रहे हैं। और करोड़ों ईर्ष्या द्वेष की अग्नि में जल-भुन भी रहे हैं। भाईचारे का तो एकदम नामो-निशान ही मिटा दिया है। किसी ने ठीक ही कहा है "देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इन्सान।" लेकिन खेद की बात है कि जो कह रहे हैं या जो गा रहे हैं, वो ही सभी इस संसार का बेड़ा गर्क कर रहे हैं।

ये दो आंखें देती हैं कई धोखे

आज मनुष्य की दूसरों को धोखा देने की प्रवत्ति बन चुकी है। लेकिन उसे यह पता नहीं है कि जो स्वयं की दो आंखें हैं, वो ही स्वयं को कितना धोखा देती हैं। यही आंखें रूप रंग के जाल में आत्मा को फंसाकर उसकी स्वतंत्रता छीन लेती हैं। इतिहास भी हमें गवाही देता है कि सूरदासजी जैसे महान सन्त ने भी इसी कारण अपनी आंखें फोड़ दी थीं। कहते हैं कि वे एक युवती को देखकर उस पर मुग्ध हो गये थे। बहुत देर तक उसकी ओर देख रहे थे। अन्त में उस युवती ने पास आकर बोला—"कहिये महाराज, क्या आज्ञा है?" यह बोल सुनकर उन्हें अपनी दृष्टि, वृत्ति और स्थिति के कारण लज्जा आयी। उन्होंने सोचा कि आँखें बुराई की ओर प्रवृत्त करती हैं। उन्होंने युवती को कहा—"आज्ञा यह है कि सूई लाकर मेरी दोनों आंखें फोड़ दो।" तो सूरदास जी के आग्रह पर उस युवती ने सूआ लाकर उनकी आंखें फोड़ दीं। इस प्रकार कभी आंखें किसी सुन्दर वस्तु या पदार्थ को देखकर ललचाती भी हैं। लोभ की प्रवृत्ति जागृत करके आपस में लड़ाई झगड़े उत्पन्न कराती हैं।

दृष्टि पतित कैसे बनी?

मनुष्य जैसे-जैसे अपने स्वधर्म से गिरता गया, तो परधर्म उसे देह के धर्मों की ओर अग्रसर करता गया। प्रकृति की तमोप्रधानता और भौतिकता की ओर के झुकाव ने दिव्य नेत्र विहीन बना दिया और मनुष्य की दृष्टि आत्मा की बजाय पतित तत्वों से बनी हुई देह पर पड़ने लगी जिससे दृष्टि पतित बनती गई। कहते हैं—"चमार की दृष्टि चमड़ी पर, जवाहरी की दृष्टि हीरे मोती पर होती है।" तो इस पतित दृष्टि ने सभी की चमार वृत्ति बना कर आत्मा रूपी हीरे को स्मृति को भुला दिया और सुन्दर चमड़ी के आकर्षण के पाश में फँसा दिया है। जिससे जो दृष्टि दूसरों को स्नेह देती थी, अब वह बुरी भावनाओं में बदल गई।

शरीर की सुन्दरता देखते-देखते आत्मा की सुन्दरता समाप्त हुई

शरीर की सुन्दरता के वश होने से मनुष्य ने

आत्मा की सुन्दरता अर्थात् श्रेष्ठ गुणों को खो दिया। काम के वश राम का नाम मिटता गया। अब काम वश मनुष्य बाहर से चाहे कितना भी सुन्दर क्यों न हो, आत्मा से कुरूप है। उनका मन विकृत है, आसुरी गुणों से सम्पन्न है।

यही हैं वो नेत्र, जिन्होंने गँवाया है चरित्र

इन्हीं पतित नेत्र रूपी खिड़कियों से ही माया रूपी बिल्ली ने अन्दर प्रवेश करके आत्मा रूपी दीपक बुझाकर चरित्र रूपी धन लूट लिया है। इन नेत्रों की विलासता की गफ़लत ने ही माया को यह डाका डालने का मौका देकर चरित्र को खो दिया और आत्मा को कंगाल बना दिया।

दृष्टि को पावन कैसे बनाएं

आत्मा को पावन बनाने के लिए दृष्टि को पावन बनाना नितान्त आवश्यक है। क्योंकि जैसी दृष्टि होती वैसी वृत्ति बनती है। और वृत्ति के आधार पर कृति होता है। तत्पश्चात् कृति से संस्कार बनते हैं। संस्कार से ही दिव्य गुण जीवन में झलकने लगते हैं। इसलिए पावन दृष्टि बनाने के लिए—

दिव्य दृष्टि का वरदान प्राप्त करें

परमात्मा वर्तमान समय इस सृष्टि पर अवतरित होकर साकार प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से प्रभु प्रेमियों को दिव्य दृष्टि का वरदान प्रदान कर रहे हैं। इसी वरदान के आधार से अन्य वरदानों की प्राप्ति स्वतः ही होती है। दिव्य दृष्टि को ही ज्ञान चक्षु या दिव्य नेत्र या दिव्य बुद्धि भी कहते हैं। इस दिव्य दृष्टि के वरदान से परमात्मा हमें अपना तथा स्वयं के स्वरूप का, आत्मा के मूल वतन का तथा आने वाली नयी पावन सृष्टि का भी साक्षात्कार कराते हैं।

जब तीसरी आंख खुलती, तब आत्मा देह भान भूलती—

कहते हैं जब तपस्वी मूर्त शंकर जी तीसरी आंख खोलते तो पुरानी दुनिया का विनाश होता है। ऐसे ही हमारा तीसरा नेत्र खुलते ही विकारों का मुखिया देहभान तथा कामदेव नष्ट होने लगते हैं क्योंकि मन में ज्ञान का चिन्तन चलने से देहभान रूपी अज्ञान समाप्त होने लगता है और आत्मा का भान सदा जागृत रहता है।

आत्मिक दृष्टि पक्की बनाएं

आत्मिक दृष्टि पक्की करने के लिए विशेष दो बातों पर ध्यान दें।

(१) एकान्तवासी बनकर शरीर से न्यारा, ज्योतिर्बिन्दु सितारा अनुभव करने का खूब अच्छी तरह से अभ्यास करें।

(२) आत्मिक दृष्टि का चश्मा लगाकर रखें। क्योंकि जैसे काले रंग का चश्मा पहनने से सब कुछ काला दिखाई देता है, पीले रंग का चश्मा लगाने से पीला ही दिखाई देता है। ऐसे ही बुद्धि रूपी नेत्र पर आत्मिक दृष्टि का चश्मा लगाकर रखने से हरेक की भृकुटी में ज्योतिस्वरूप आत्मा स्वतः ही दिखाई देगी, फलस्वरूप रूहानी दृष्टि बनी रहेगी।

अगर होगी दृष्टि रूहानी, तो कभी नहीं होगी हानि—क्योंकि रूहानी दृष्टि वालों पर माया अपना प्रभाव डाल कर नुकसान नहीं पहुंचा सकती।

बुद्धि रूपी नेत्र से पतित पावन परमात्मा को देखने का अभ्यास करें

पतित पावन परमात्मा जो परम सुन्दर है, उन्हें बुद्धि रूपी नेत्र से देखने से आत्मा संग के रंग से पावन बनती जाएगी और किसी भी पतित आत्मा की तरफ आकर्षित नहीं होगी क्योंकि वर्तमान समय सभी पतित आत्माओं पर विकारी संस्कारों के काले धब्बे (Black spots) हैं, तो क्यों न हम सत्यम् शिवम् सुन्दरम् परमात्मा को देखते रहें बजाय पतित आत्माओं को देखने से। इस अभ्यास से आत्मा की आंख (बुद्धि) चलायमान नहीं हो सकती।

देखते हुए न देखने का अभ्यास करें

स्थूल आंखों से देखते हुए न देखने का अभ्यास तभी सम्भव है जब बुद्धि रूपी नेत्र शिव परमात्मा को देखने में व्यस्त हों। क्योंकि जब बुद्धि पर प्रभाव सर्वशक्तिवान परमात्मा का है, तो स्थल आंखों के

सामने आने वाली किसी व्यक्ति वा वस्तु का प्रभाव नहीं पड़ सकता। क्योंकि संकल्पों का प्रवाह परमात्मा के तरफ ही बहता रहता है। अनुभव यही कहता है कि जिसे बुद्धि रूपी नेत्र देखता रहता है उसी पर मन सदा संकल्प करता रहता है।

जब बुद्धि रूपी नेत्र में परमात्मा की मोठी छवि समाई रहती है तो मनुष्य को कुछ भी भौतिक पदार्थ देखने का आकर्षण नहीं रहता। वह इस संसार में रहता भी एक अलिप्त योगी की तरह विचरण करता है और इससे ही उसे सच्चा आत्मिक सुख मिलता है। चारों तरफ देखते रहने से आत्मा जैसे अस्थिर रहती है गोया भूखी रहती है, क्योंकि—

"अगर होगी देखने की भूख, तो कभी न मिलेगा सुख।"

परमात्मा की पावन दृष्टि ने रची है नव सृष्टि

परमात्मा ने सृष्टि पर आते ही सभी को पावन दृष्टि देकर पवित्र होने का बल दिया। विकारों में गोते खाती रूहोंने सागर में तैरना सीखा। हमने देखा— परमात्मा की सम्पूर्ण पावन दृष्टि का चमत्कार, जिसमें रूहानी आकर्षण है जिसमें मनुष्य को देवता बनाने का जादू है।

जिनकी होंगी पवित्र आंखें, वो ही जायेंगे तीखे

इस आध्यात्मिक दौड़ (Spiritual race) में जिन आत्माओं की आंखें पवित्र होंगी वो ही तेज़ी से सम्पूर्णता की मंजिल की ओर आगे बढ़ते रहेंगे। उन्हों की आंखें मायावी आकर्षण के प्रभाव से दूर अर्थात् नाम-रूप की बीमारी से बचे रहेंगे। कोई भी समस्या या परिस्थिति रूपी रोड़ा या दीवार उन्हें रोक न पायेगी। वे सदा हर्षित रहकर हल्के-फुल्के बन एक परमात्मा की महिमा में गीत गाते और उड़ती कला में उड़ते रहेंगे और अन्य आत्माओं को भी तीव्र पुरुषार्थ करने की चेतावनी देते रहेंगे।

रूहानी दृष्टि व रूहानी वृत्ति अन्त में सेवा के साधन बनेंगे

शिव बाबा ने कई बार कहा है कि—मीठे बच्चे—"अन्त में ऐसी भयानक परिस्थितियां आयेंगी, तब आप इन स्थूल सेवा के साधनों द्वारा ईश्वरीय सेवा नहीं कर सकोगे।" प्राकृतिक आपदाएं और गृहयुद्धों के चम्बे में फंसे हुए भयावह तथा चिन्ताग्रस्त अशान्त आत्माओं की तुम्हें अपनी एक सेकण्ड की सम्पन्न दृष्टि से शान्ति की प्यास बुझानी होगी। और शक्तिशाली रूहानी वृत्ति से शान्ति तथा शक्ति के प्रकम्पन फैलाकर करोड़ों आत्माओं को राहत देनी होगी। इस प्रकार की बेहद सेवा करने का सौभाग्य पावन दृष्टि और वृत्ति वाली आत्माओं को ही प्राप्त होगा।

पावन दृष्टि दूरदर्शन का काम करेगी

पावन दृष्टि अर्थात् वाइसलेस (Viceless) दृष्टि। ऐसी पावन दृष्टिवालों का ही वायरलेस (Wireless) सर्वशक्तिवान् परमात्मा से जुटा हुआ रहेगा। वे प्यार के सागर परमात्मा में समाएं रहेंगे। उन्होंके आंखों रूपी पर्दे पर भगवान की हज़ारों लीलाएं करोड़ों प्रभु-प्रेमियों को दिखाई देंगी और वे भी परमात्मा के प्यार में खो जायेंगे। पावन दृष्टि के बल से आत्मा सहज ही परमात्मा की प्रेरणाओं को पकड़ सकेगी और अनेक परिस्थितियों में सही समाधान दे सकेगी।

भगवान के नयनों में बसने वाले जैसा भाग्यशाली इस संसार में कोई नहीं

जो महान् आत्माएं सदा अपने दिव्य नेत्र में दिव्य दृष्टि विधाता शिव परमात्मा को प्यार से समाकर रखते हैं ऐसी आत्माओं को ही भगवान् उतने ही प्यार से अपने नयनों में समाकर रखते हैं जिससे उन्हें माया की नज़र कभी लग ही नहीं सकती। क्योंकि इस बेहद ड्रामा का नियम ही है Every action has opposite reaction, प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया होती है तो यह परम सौभाग्य पावन दृष्टिवालों को ही प्राप्त हो रहा है और होता रहेगा। उन्होंके भाग्य की तुलना इस संसार की किसी भी चीज से नहीं की जा सकती।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

चिन्तन

विश्व-सेवा

ब्र० कु० ओमप्रकाश मसुरहा, बांदा

भारत के महान चिन्तक, महात्मा गान्धी जी के परम शिष्य, सर्वोदय आन्दोलन के माध्यम से देश में जागति पैदा करने वाले, स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रणी, महान देशभक्त सन्त बिनोवा जी के जीवन की एक घटना है। एक बार कोई युवक उनके पास गया और उसने विनोवा जी से कहा, "बाबा, मैं देश सेवा करना चाहता हूँ, मुझे मार्ग-दर्शन दें।" बिनोवा जी ने कहा, "अच्छा, बच्चे सच-सच यह बताओ कि तुम्हारे देश-सेवा में जाने से तुम्हारे घर परिवार वाले खुश होंगे या नाखुश ?" तो उस युवक ने उत्तर दिया कि बाबा मेरे घर वाले तो देश-सेवा का नाम लेते ही बहुत ही नाराज होते हैं।" तो बिनोवा जी ने कहा, "बच्चे जानते हो, देश सेवा का क्या अर्थ होता है ? देश सेवा का अर्थ होता है. सारे देशवासियों को खुश रखना। अब तुम ही बताओ कि जब तुम अपने घर-परिवार वालों को ही खुश नहीं रख सकते हो तो पूरे देशवासियों को कैसे खुश रखेंगे।

इस सम्बन्ध में ज्ञान के सागर परम पिता परमात्मा शिव ब्रह्मा तन के माध्यम से इससे भी ऊँच महान बातें कहते हैं, 'मीठे बच्चे ! तुम तो विश्व सेवाधारी हो, अतः तुम्हें मन-पसन्द, परिवार पसन्द तथा जगपसन्द बनना है। मनपसन्द यानी अपने कार्य व्यवहार से स्वयं सन्तुष्ट, परिवार-पसन्द यानी घर परिवार तथा ईश्वरीय परिवार को अपने कार्य व्यवहार से खुश रखना, जग पसन्द यानी कि हम किसी के भी सम्पर्क सम्बन्ध में आवें अर्थात् दुनिया के सभी व्यक्तियों को अपने कार्य, व्यवहार, भाव-स्वभाव, चलन द्वारा सन्तुष्ट, खुश रखना। यानी तुम्हें तो सच्चा-सच्चा विश्वमित्र बनना है। जन-जन तक यह शुभ सन्देश पहुंचाना है कि आप सभी बिन्दु रूप ज्योतिस्वरूप आत्मायें हैं, शरीर से अलग भृकुटि मध्य बैठ शरीर को चलाने वाली, मुझ एक विश्व कल्याणकारी शिव बाबा यानी अल्लाह या गाड फादर या ईश्वर यानी मुझ शिव भगवान की अविनाशी सन्तान आपस में सभी भाई-भाई हो। अब विश्व परिवर्तन का समय है। हमें तो आपस में मिल-जुलकर नयी सतयुगी दुनिया का निर्माण करना है, जहां सभी लोग पवित्र, निरोगी, सुखी एवम् सम्पन्न हो। "तो ऐसी स्थिति में तो हम सभी को आपस में कोई लड़ाई झगड़ा आपस की वेमनस्यता, ईर्ष्या, द्वेष, कुसंग, देहाभिमान, काम-क्रोध, मद, लोभ, मोह, मत्सर, आलस्य आदि बुराइयों से न केवल बचना है वरन् अपनी शक्ति को, आपस के संगठन को मजबूत करने, स्नेहसूत्र में बंधकर एक ईश्वर पिता की आज्ञाओं का पालन करते चलने में और नयी सुखमयी दुनिया की आधारशिला रखने में लगाना है। फिर इस युवा वर्ष में तो विशेष तौर पर हमें याद रखना है कि हमने जो यह दृढ़ संकल्प लिया है कि—

हम दुनिया नई बनायेंगे,
तन मन सेवा में लगायेंगे।
चलेंगे शिव बाबा की मत पर,
स्वर्ग धरा पर लायेंगे॥

को पूर्ण कर दिखाना है। यही विश्व सेवा का ईश्वरीय कार्य है जिसे हम सबको आगे बढ़ाने का श्रेष्ठ कर्तव्य बुद्धि में सदैव रखना चाहिये। अलबेलेपन के कारण हमें किसी को भी नाखुश नहीं करना है।

जैसी स्मृति वैसी स्थिति

ले०—ब्र० कु० सुधा, शक्ति नगर, दिल्ली

शिव बाबा के अनमोल महावाक्यों में हम एक महावाक्य समय प्रति समय सुना करते हैं—"जैसी स्मृति वैसी स्थिति"। अंग्रेजी में भी एक कहावत है—As you think so shall you become अर्थात जैसा आप सोचोगे, वैसा बन जाओगे। भावार्थ यही हुआ कि हमारे विचारों का हमारी स्थिति पर बहुत प्रभाव पड़ता है। सृष्टि चक्र के आदि से लेकर अन्त तक भी हम इसके प्रमाण देखते हैं। परन्तु प्रश्न उठता है कि स्मृति हमारी स्थिति को कैसे प्रभावित करती है? इस बात को स्पष्ट करने के लिए मैं एक छोटी-सी कहानी आपको सुनाती हूँ।

एक बार की बात है कि एक जंगल में एक लोमड़ी रहा करती थी। सुबह उठते ही उसे भूख लगी परन्तु उसके पास कुछ भी खाने के लिए नहीं था। वह अपनी गुफा में से अपने भोजन की तलाश में निकल पड़ी। चलती गई, चलती गई, सूर्योदय हो गया। चलते-चलते उसकी निगाह अपनी परछाई पर पड़ी। चूंकि सूर्य अभी उदय हुआ ही था, उसकी परछाई उससे बहुत बड़ी थी। परन्तु लोमड़ी ने अपनी परछाई को देखकर सोचा कि मैं इतनी बड़ी हूं, (उसे यह ज्ञान नहीं था कि सूर्योदय के समय परछाई बड़ी दिखाई देती है) अतः आज तो नाश्ते में हाथी की आवश्यकता होगी। उसके बिना तो मेरा पेट नहीं भरेगा। ऐसा सोचकर अब वह हाथी को ही ढूंढ़ने लगी कि कहीं कोई हाथी मिल जाए तो वह अपनी भूख मिटा सके। चलते-चलते दोपहर हो गई, उसे कहीं कोई हाथी नहीं मिला।

सूर्य एकदम ऊपर आ चुका था, लोमड़ी भूख से व्याकुल हो रही थी। अचानक उसकी नज़र फिर जमीन पर पड़ती अपनी परछाई की ओर गई। अब परछाई बहुत छोटी थी। अपनी छोटी परछाई को देखकर उसने सोचा कि मुझे ग़लतफहमी हो गई थी। मैं तो इतनी छोटी-सी हूँ, अब तो मुझे भोजन में चूहा ही काफी रहेगा। मैं ख्वामख्वाह हाथी को ढूंढ़ती रही और भूखी रह गई।

अज्ञानता के कारण अथवा ज्ञान के न होने के कारण जैसे वह लोमड़ी अपनी परछाई से ही अपने को बड़ा या छोटा निर्णय करती रही और उसकी स्थिति पर भी उसका प्रभाव पड़ता रहा ठीक इसी प्रकार आत्मा जब अपने बाहरी दैहिक स्वरूप को देख कर उसी अहंकार में आ जाती है, अपने वास्तविक स्वरूप को विस्मृत कर दैहिक स्मृति में स्थित हो जाती है तो उसके व्यवहार में फौरन परिवर्तन आ जाता है। सष्टि चक्र के ज्ञान को भी जब हम दोहराते हैं तो यही पाते हैं कि द्वापर युग के प्रारम्भ में आत्मा स्वयं को भूल देह समझने लगी और उसका परिणाम यह हुआ कि वह विकाराधीन होती गई। कर्मेन्द्रियों की ग़ुलाम बन गई, अपने वास्तविक शान्ति व मधुरता के स्वभाव को भूल कड़वे और अशान्त स्वभाव वाली बन गई। और, इससे पूर्व सतयुग और त्रतायुग में जब आत्मा को अपनी स्मृति थी तो उसकी स्थिति, उसका व्यवहार कितना प्रेम पूर्ण था, मधुर था, शीतल था। तभी तो आज तक भी वहाँ का वर्णन करते हुए यह कहा जाता है कि उस दैवी राज्य में शेर और बकरी भी एक घाट पर पानी पीते थे।

इसीलिए ज्ञान के सागर, कल्याणकारी शिव पिता का हम बच्चों को कहना है कि श्रेष्ठ स्मृति रखो। अपनी स्मृति को बार-बार चेक करते रहो और अगर कोई अशुद्ध या व्यर्थ या निकृष्ट स्मृति

हो तो फौरन उसे परिवर्तित कर दो। इसके लिए बाबा ने हम आत्माओं को विभिन्न प्वाइन्ट्स दिये हैं जिन्हें हमें अपने स्मृति-पट पर अंकित करना है। उनमें से कुछेक का विवरण हम नीचे दे रहे हैं।

कुछ श्रेष्ठ संकल्प

१. सदा याद रखो कि मैं एक विशेष आत्मा हूँ—विशेष आत्मा वही है जिसका हर कर्म विशेष हो, साधारण नहीं। बाबा कहते, "विशेष आत्मा बनने के लिए एक तो हरेक आत्मा में विशेषता देखो, उनका अवगुण या दुर्गुण नहीं। और दूसरे, अपनी विशेषता को कार्य में लगा दो। अपनी विशेषताओं को ईश्वरीय सेवा में इस्तेमाल करो।" अतः यह स्मृति कि मैं एक विशेष आत्मा हूँ—हमें विशेषता देखने, विशेषता सुनने, विशेष कर्म करने और अपनी विशेषताओं को सेवा में लगाने में तत्पर कर देगी और अन्ततोगत्वा हम अपनी मंजिल को प्राप्त कर पायेंगे।

२. एक चिन्ता लग जाये कि मुझे तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बस, इस पढ़ाई में कहीं मैं फेल न हो जाऊँ—यह स्मृति भी कितनी श्रेष्ठ है। विद्यार्थी को सिर्फ अपनी पढ़ाई की ही चिन्ता रहती है। उसे अपनी पढ़ाई ही हर वक्त स्मृति में रहती है। उसे लग्न रहती है कि मैं पढ़ाई में वज़ीफ़ा प्राप्त करूँ। कहीं कोई ऐसी ग़लती न हो जाए जिससे मैं अनुतीर्ण हो जाऊँ। तो बाबा भी कहते हैं कि अगर आपको यह स्मृति रहती है कि मुझे सतोप्रधान बनना है, फेल नहीं होना है तो प्रतिदिन आने वाली विभिन्न परिस्थितियों रूपी पेपरों में आप अवश्य उत्तीर्ण होंगे क्योंकि इन्हीं पेपरों को पास करके ही तो आप अपने लक्ष्य को पा सकेंगे। इस प्रकार यह स्मृति हमारी स्थिति को इतना मजबूत बना देती है कि कठिन-से-कठिन परिस्थिति भी सहज ही टल जाती है।

३. यह श्रेष्ठ स्मृति रहे कि इस अन्धकारमय जग को प्रकाशित करने वाला मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ—जिस प्रकार सूर्य के उदय होने पर सब पर रंगत छा जाती है, वृक्षों में, फूलों में, पशुओं में, पक्षियों में और सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य में—सबमें एक नई रौनक आ जाती है। कीट, पतंगे, कीटाणु सब मर जाते हैं। इसी प्रकार मैं ज्ञान सूर्य परमात्मा की सन्तान मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ, अगर मुझे यह स्मृति रहे तो माया का अन्धकार हमें अपनी चपेट में ले नहीं सकता। क्योंकि मुझ ज्ञान सूर्य का कर्त्तव्य इस जग को आलोकित करना है तो मैं कैसे अज्ञानता के अन्धेरे में घिर कर कोई निकृष्ट कर्म कर सकता हूँ। निकृष्ट कर्म तो क्या, अशुद्ध संकल्प भी नहीं हो सकता। अशुद्ध संकल्पों रूपी मच्छर सब मर जायेंगे।

इस प्रकार विचार करने पर आप देखेंगे कि बाबा ने हमें बहुत-सी श्रेष्ठ स्मृतियाँ दी हैं जिनको हम अगर दोहराते रहें तो उससे हमारी स्थिति अत्यन्त श्रेष्ठ हो सकती है।

सूचना

'भारत एकता युवा पदयात्रा' से सम्बंधित ज्ञानामृत का विशेष अंक छापा गया था। कुछ हमारे पास बचा है। जो लेना चाहें वे मंगा सकते हैं।

—व्यवस्थापक

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

दिल्ली चांदनी चौक—युवा समारोह के अवसर पर दादी प्रकाशमणी जी, व अन्य मुख्य बहनों-भाइयों के दिल्ली प्रवास के दौरान २० अक्तूबर को खारी बावली सेन्टर पर नये आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन दादी जानकी जी के द्वारा सम्पन्न हुआ तथा उसी दिन दिल्ली नगर निगम के हाल में नवरात्री समारोह मनाया गया।

२२ अक्तूबर को देहली के लाल किले के सामने सुभाष मैदान में भी धार्मिक रामलीला कमेटी के पदाधिकारियों के द्वारा दादी प्रकाशमणि जी व उनके साथ दादी निर्मल शान्ता जी, दादी चन्द्रमणि, तथा ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी का रामलीला की स्टेज पर तीन लाख लोगों के सम्मुख भव्य स्वागत किया गया। फिर दादी जी ने पूरी सभा को शिवबाबा के महावाक्यों से सम्बोधित किया जिससे देहली नगरवासियों को बड़ी संख्या में भगवान की सच्ची लीला का परिचय मिला। दादी जी के साथ स्टेज पर दिल्ली की उपमहापौर बहन अन्जना कंवर भी मौजूद थीं।

लुधियाना—शहर के प्रसिद्ध दरेसी ग्राउण्ड में दीपावली के उपलक्ष्य में एक विशाल रैडक्रास मेले का आयोजन किया गया। इस मेले में हमारे विद्यालय को भी स्टाल लगाने के लिए आमन्त्रित किया गया। इसलिए मेले में एक बहुत ही सुन्दर स्टाल बनाया गया। इस स्टाल को अन्दर से आध्यात्मिक प्रदर्शनी के चित्रों द्वारा और बाहर कुछ बड़े-बड़े चित्रों से सजाया गया। यह स्टाल मेले का आकर्षण केन्द्र बन गया, इस तरह अनेकों आत्माओं को बाबा का सन्देश दिया गया।

हाथरस—दीपावली के शुभ अवसर पर बैंक कालोनी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी व प्रोजेक्टर शो का कार्यक्रम रखा गया, इसके अलावा गोवर्धन मेले के अवसर पर मेले में स्टाल बनाकर बड़े धूम-धाम से ईश्वरीय सन्देश देने का कार्यक्रम रखा गया। इसके द्वारा हजारों आत्माओं को सन्देश मिला।

बरनाला—बरनाला की ओर से रामपुरा में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का दो दिन के लिए आयोजन किया गया। तीन दिन राजयोग शिविर व ज्ञान योग शिविर भी रखा गया जिसमें अनेक आत्माओं ने लाभ लिया।

झालावाड़—समाचार मिला है कि झालावाड़ नगर में दीपावली के उपलक्ष में एक चैतन्य झांकी श्री लक्ष्मी जी की सजाई गयी तथा आध्यात्मिक प्रदर्शनी भी लगाई गयी जिससे नगर की बहुत-सी आत्माओं ने लाभ उठाया।

घाट-कोपर (बम्बई)—चेंबुर में चैतन्य शिव शक्तियों की भी झांकी सजाई गयी जिसका उद्घाटन भूतपूर्व मंत्री (महाराष्ट्र) एडवानी जी से कराया गया, इनके द्वारा सिन्धी भाई-बहनों की अच्छी सेवा हुई। अंतर्राष्ट्रीय संस्था सहेली मंडल के प्रमुख सदस्य भी यह चैतन्य देवियों की झांकी देखने आये थे। गणपति गणेश के पूजन के अवसर पर गणपति रहस्य की छोटी पुस्तिका छपाकर काफी संख्या में बांटी गयी। इस तरह शिव बाबा का ईश्वरीय सन्देश बहुत-सी आत्माओं को दिया गया।

देगलूर (मराठवाड़ा)—में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन न्याय दण्डाधिकारी भ्राता चिटितस जी ने किया इस प्रदर्शनी को हर वर्ग की आत्माओं ने देखा। करीब १०० लोगों ने योग शिविर द्वारा लाभ लिया।

दिल्ली त्रिनगर—सेवाकेन्द्र की ओर से ग्राम नौहझील में ग्राम प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। ग्राम के मुख्य सेठ केदारनाथ ने इस प्रदर्शनी को देखकर शराब, सिगरेट आदि सर्व नशीली वस्तुओं का त्याग किया। इसके अलावा मादीपुर, ज्वाला हेड़ी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन करके अनेक आत्माओं को प्रभु का सन्देश दिया गया।

अमराईवाड़ी (अहमदाबाद)—सेवाकेन्द्र द्वारा जन-जन

तक ईश्वरीय सन्देश पहुंचाने के लिए नये सेवाकेन्द्र का शुप्रारम्भ किया गया। इस दिन यहां के प्रख्यात हाल में एक फंकशन का कार्यक्रम रखा गया। साथ-साथ सुन्दर स्वर्ग की चैतन्य झांकी का भी आयोजन किया गया। नये सेवाकेन्द्र के खुलने में अनेक आत्माओं को ज्ञान-योग सिखने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

पूना (मीरा सोसायटी)—सेवाकेन्द्र की ओर से लोणंद नामक ग्राम में ग्राम पंचायत के हाल में सहज राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन ग्राम पंचायत के मुख्य सरपंच मा० आनन्दराव जी ने किया। इसके अलावा यहां के पंच महाजन वाड़ा के हाल में सहज राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें अनेक आत्मा आत्मिक जागृति से लाभान्वित हुईं। इसके बाद बारामती नगर के प्रसिद्ध "कविवर्य मोरोपंत स्मारक सभा गृह" में राजयोग चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन "ज्ञानेश्वरी" की प्रवचनकार बहन कु० सरल ताई बाबर जी ने किया। मुख्य अतिथी महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध व प्रभावशाली वक्ता प्राचार्य मा० श्री शिवाजी राव भोंसले जी ने भी अपने विचार प्रगट करते हुए ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के कार्यक्रमों की प्रशंसा की। राजयोग शिविर द्वारा अनेक आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

अहमबाद एलिसब्रीज—समाचार मिला है कि मोरबी लायंस क्लब में "सच्ची समाज सेवा" विषय पर ब्र० कु० बहनों के प्रवचन हुए। इसके द्वारा वहां के मेम्बरों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। रामखड़ यूथ वेलफेयर सोसायटी में भी ब्र० कु० बहनों को प्रवचन के लिए बुलाया गया। जहां पर ८०० आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अलावा कुछ मुख्य महानुभावों से व्यक्तिगत मुलाकात हुई। जिसमें कर्नाटक के मुख्य मंत्री भ्राता रामकृष्ण हेगडेजी, भ्राता मोरार जी देसाई, गुजरात युवा कांग्रेस (आई) के प्रेसीडेन्ट भ्राता सुरेन्द्र जी, भ्राता याकूब जी (जो मुस्लिम वेल्फेयर सोसायटी के प्रेसीडेन्ट हैं) आप सभी को माउन्ट आबू में होने वाली गोल्डन जुबली के लिए आमंत्रित किया गया।

भुज-कच्छ—समाचार मिला है कि नवरात्री महोत्सव के अवसर पर भुज-कच्छ में पहली बार ही चैतन्य नव-देवियों की झांकी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन जिला पंचायत के प्रमुख भ्राता शिवदास भाई पटेल ने किया था। झांकी के साथ-साथ नव-देवियों का आध्यात्मिक रहस्य और परमपिता परमात्मा के दिव्य अवतरण का सन्देश दिया गया। लायन्स क्लब भुज और फारेस्ट डिपार्टमेन्ट कच्छ के द्वारा आयोजित "वाईल्ड लाईफ वीक" में ब्र० कु० बहनों को प्रवचन के लिए निमन्त्रण मिला।

लेह लद्दाख से युवा शान्ति यात्रा—जम्मू-काश्मीर के लद्दाख रीजन से विश्व की चोटी लेह नामक नगर से जो चीन देश के साथ लगता है युवा शान्ति यात्रा का आरंभ किया गया। यह शान्ति यात्रा खलसी, करगल नामक नगर में ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् श्रीनगर के लिए रवाना हुई। श्रीनगर सेवाकेन्द्र पर वहाँ के डिप्टी कमिश्नर द्वारा यात्रियों का भव्य स्वागत हुआ। अनन्तनाग में वहाँ के डि० डेवलपमेन्ट कमिश्नर ने यात्रियों का एक पब्लिक फंकशन में भव्य स्वागत किया। अनन्तनाग में पहली बार शान्ति यात्रा निकाली गई और साथ में प्रदर्शनी का विशेष कार्यक्रम रखा गया। यह पदयात्रा कांजीगुण्ड, बनहाल, रामसू, रामबन, चन्द्रकोट, बटोत, पतनीलप, कुद चिचैनी के नगरों और स्कूलों में सेवा करते उधेमपुर नगर में पहुंचे जहाँ पर उनका भव्य स्वागत हुआ। इसके पश्चात् यात्री जम्मू पहुँचे। जम्मू सेवाकेन्द्र पर वहाँ के डिप्टी कमिश्नर द्वारा स्वागत हुआ। इसके पश्चात् यात्री कठुआ पहुँचे। अब यात्री कठुआ से पठानकोट के तरफ चले। बीच के सभी गाँवों की अच्छी सेवा हुई। पठानकोट में भी यात्रियों का भव्य स्वागत हुआ। इस तरह जम्मू-कश्मीर में पदयात्रियों द्वारा अच्छी सेवा हुई।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ६/१६ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No 10563/65-D, (E)—70